TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

अप्रैल 2025

अंक 8

मासिक कविता संग्रह

ई-पत्रिका तक पहुँचने के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

पद्यपंकज काव्य संग्रह

प्रकाशन सहयोग

संपादक

देव कांत मिश्रा
मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज,
भागलपुर(टीम लीडर)

आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है— जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

SCERT, PATNA

सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1. पेड़ भी हैं जीवित प्राणी	नीतू शाही	9
2. बैशाखी का पर्व	राम किशोर पाठक	10
3. भीमराव: अंतिम विचार: आत्मज्योति की लौ	सुरेश कुमार गौरव	11
4. दोहावली	मनु कुमारी	12
5. भीमराव अम्बेडकर	नीतू रानी	13
6. ज्ञान के दीपक	सुरेश कुमार गौरव	14
7. गोरैया	मनु कुमारी	15
8. जभी जागो तभी सवेरा	नीतू रानी	16
9. हिंदी है भारत की वाणी	सुरेश कुमार गौरव	17
10. नामांकन गीत	चाँदनी समर	18
11. समरसता हो सदा सभी में	मनु कुमारी	19
12. गीत	श्वेता साक्षी	20
13. प्रेम की शक्ति	डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	21
14. शिक्षक हूं बिहार का	राम किशोर पाठक	22
15. बिहार: संस्कृति का समृद्ध सार	सुरेश कुमार गौरव	23
16. विश्व विरासत दिवस	राम किशोर पाठक	24
17. वन हैं धरती की पहचान	सुरेश कुमार गौरव	25
18. एक छोटी चिड़िया	नीतू रानी	26
19. दर्पण	राम किशोर पाठक	27
20. पिता	गिरीन्द्र मोहन झा	28
21. जीने का अधिकार	राम किशोर पाठक	29
22. चित्रधारित सृजन	नीतू रानी	30
23. बाल कविता: पेंसिल	राम किशोर पाठक	31
24. हम हैं टीचर्स ऑफ़ बिहार	मनु कुमारी	32
25. जीने का अधिकार	मनु कुमारी	33
26. प्रगति तुम बढ़े चलो	सुरेश कुमार गौरव	34
27. मुट्ठी में आकाश करो	कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"	35
28. जागो, उठो समय है पुकारता	सुरेश कुमार गौरव	36
29. बिन शिक्षक वैभव अधूरा	सुरेश कुमार गौरव	37
30. यह चिड़िया कहाँ रहेगी	संजय कुमार	38
31. बदलें बिहार आओ	राम किशोर पाठक	39

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
32. मुन्नी रोज आती स्कूल	नीतू रानी	40
33. विद्यालय की जुदाई	एम० एस० हुसैन “कैमूरी”	41
34. माता पिता के चरणों में	मनु कुमारी	42
35. ॐ ब्रह्म का स्वरूप	डॉ स्नेहलता द्विवेदी ‘आर्या’	43
36. हमारी धरती	आशीष अम्बर	44
37. हम सब धरती की संतान हैं	नूतन कुमारी	45
38. मिल जुलकर ये प्रण दुहराएं	रुचिका	46
39. कुंवर सिंह: बलिदान की गाथा	सुरेश कुमार गौरव	47
40. शहर की चीख	अवनीश कुमार	48
41. धरती माँ की पुकार	सुरेश कुमार गौरव	49
42. पृथ्वी को सुरक्षित करें	एम० एस० हुसैन “कैमूरी”	50
43. वसुधा पुकारती	एस के पूनम	51
44. विधा: दोहा	देवकांत मिश्र ‘दिव्य’	52
45. राम नाम है शीर्ष जगत में	अमरनाथ त्रिवेदी	53
46. मधुमास का यह प्यार है	अमरनाथ त्रिवेदी	54
47. खाकर हो जाते हवा हवाई	नीतू रानी	55
48. वीर कुँवर सिंह	रत्ना प्रिया	56
49. संसार के असली मर्म	अमरनाथ त्रिवेदी	57
50. आओं हम सिखलाएं	राम किशोर पाठक	58
51. प्रियवर तब रामायण पढ़ना	संजय कुमार (DEO)	59
52. वीर कुँवर की हुंकार	एस के पूनम	60
53. कुँवर सिंह	राम किशोर पाठक	61
54. अब हमें भूगोल बदलना चाहिए	निधि चौधरी	62
55. पुस्तकें	रत्ना प्रिया	63
56. सुन री दीया	अवनीश कुमार	64
57. बड़ा कठिन है रे मन	अवनीश कुमार	65
58. माँ	अश्मजा प्रियदर्शिनी	66
59. दोहा विधान	राम किशोर पाठक	67
60. दोहावली	सुरेश कुमार गौरव	68
61. प्रार्थना	संजय कुमार (DEO)	69
62. महावीर का पावन प्रकाश	सुरेश कुमार गौरव	70
63. विश्वास और अभ्यास का छंद सोरठा	राम किशोर पाठक	71
64. मन अपना वासंती कर लें	अमरनाथ त्रिवेदी	72
65. अहिंसा के पुजारी महावीर	अमरनाथ त्रिवेदी	73
66. जीवन-यात्रा	गिरिन्द्र मोहन झा	74
67. मोबाईल की लत	नीतू रानी	75
68. आम / आदमी / अंदाज	राम किशोर पाठक	76
69. मर्यादा की रास में	राम किशोर पाठक	77
70. यह नव वसंत कुछ बोल रहा	अमरनाथ त्रिवेदी	78
71. शुभ्रक की अमर गाथा	राम किशोर पाठक	79
72. मोबाइल का जाल	सुरेश कुमार गौरव	80
73. पिता	राम किशोर पाठक	81
74. पुस्तकें: ज्ञान का वरदान	देवकांत मिश्र ‘दिव्य’	82

पेड़ भी है जीवित प्राणी

हर दिल में बस एक ही वाणी,
पेड़ भी है जीवित प्राणी।
मुझे पेड़ लगाने और लगवाने में,
आता है आनंद की अनुभूति ।
मैं खुश हूं कि मैने जीवन में,
एक नेक काम करने की बीड़ा उठाई।
एक-एक पानी की बाल्टी भरकर,
पेड़ों में देने के दौर से गुजरी ।
पेड़ों की परवरिश करने में आती हैं खुशी,
पेड़ हमारे सच्चे मित्र,
कभी हमसे कुछ नहीं लेती
सिर्फ देना इसका काम ।
आओ मिल कर पेड़ लगाएं
हर दिल में बस एक ही वाणी,
पेड़ भी है जीवित प्राणी..।

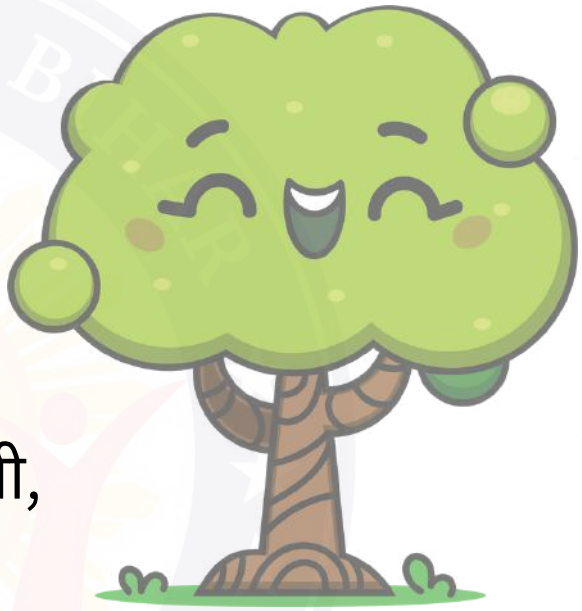

नीतू शाही,
प्रा0 वि0 प्रखंड कॉलोनी
फुलवारी शरीफ, पटना
(पर्यावरण मित्र)

बैशाखी का पर्व है

कहते मेष संक्रांति,
है विषुवत संक्रांति,
फसल कटाई शांति,
बैशाखी का पर्व है।
सूर्य का मेष प्रवेश,
पंज प्यारे धर वेश,
हरिद्वार ऋषिकेश,
मेला पर गर्व है।
पुथण्डु बोहाग बिहू,
पोहेला बोशाख कहूँ,
बसोआ बिसुआ विशु,
खुशी में गंधर्व हैं।
बैशाख प्रथम हर्ष,
बंगाल का नववर्ष,
उत्तर हिंद उत्कर्ष,
होते खुश सर्व है।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना)

भीमराव अम्बेडकर - अंतिम विचार: आत्मज्योति की लौ

जीवन भर संघर्ष था, पर न रुका विचार।
हर पीड़ित के हित रहा, निज मन का सुविचार॥

शोषण की दीवार को, तोड़ा सत्य-विचार।
सत्ता-मंचों से कहा,"बस चाहूँ उच्च विचार॥"

काया थकी, मन न थमा, लेखनी रही स्वदेश।
न्याय-धर्म के युद्ध में, रहा वही संदेश॥

बुद्ध मार्ग को चुन लिया, अंतर्मन की पीर।
वेद-पुराणों से अलग, ढूँढा शांति का तीर॥

"समानता ही धर्म है, बाँट न पाए ध्यान।
भेदभाव को त्याग दो, यही सच्चा ज्ञान॥"

शेष नहीं कुछ और था, लक्ष्य हुआ साकार।
भारत माँ की गोद में, विश्रांत महामानव आकार॥

जीवन भर संघर्ष था, पर न रुका विचार।
हर पीड़ित के हित रहा,निज मन का उद्गार।।

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक'
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

दोहावली

प्रेम प्रलोभन दे रही, खड़ी राम के पास।
मन में थी यह चाहना, होगी पूरी आस।।
मर्यादा की रास में, किये न अनुचित काम।
आमंत्रण ठुकरा दिए, क्षमा सहित श्रीराम।।
हठ की जब सौमित्र से,काट लिए वह घ्राण।
बोली युवती ज्येष्ठ से,हर लो उसके प्राण।।
चंद्रमुखी सुंदर सिया, वही राम की जान।
भ्राता गर तू पा सके, जाए उसका मान।।
अनुजा के अपमान से, क्रोधित हो लंकेश।
हर लाया वो जानकी,धरकर साधू वेश।।
सिय को पाने को बना, श्यामल राम अनूप।।
सीता में उसको दिखा, मंदोदरी स्वरूप।।
लेकर रघुवर नाम वो, जपा करीं दिन रैन।
आएँ मेरे राम तो, मिले हृदय को चैन।।
रावण को वह मारकर, किया सिया उद्धार।
तीन लोक में हो रही, रघुवर की जयकार।।
प्रजा हितों को देखकर, राम किए बलिदान।
मर्यादा की रास में, दिया सिया को मान।।
सीता थी जब अख्य में, किये याग श्रीराम।
सिय मूरति ले साथ में, करते धर्म तमाम।।

मनु कुमारी
'विशिष्ट शिक्षिका'
मध्य विद्यालय सुरीगाँव
बायसी,पूर्णियाँ, बिहार

भीमराव अम्बेडकर

भारत के ये वीर सपूत,
जिसने मिटाया छुआछूत।
रामजी मालोजी सकपाल के थे सुपुत्र
भीमाबाई के थे चौदहवीं पुत्र।
गरीब परिवार में लिए अवतार,
व्यक्तियों में बन गए वो खास।
रोज पढ़ने जाते थे स्कूल,
शिक्षक बैठाते, उन्हें बच्चों से दूर।
जब लगती थी इनको प्यास,
कोई न देता इनको गिलास।
जाते थे जब आप कुँए के पास,
कोई ऊपर से गिराता पानी हाथ।
पानी पीकर लौटते थे निराश,
नहीं देता इनका कोई साथ।
जब पढ़-लिखकर बन गए लाल,
मिटा दिए छुआछूत जात-पात।
मिटा दिए दलितों का श्राप,
संविधान खुद से लिखे आप।
काम करते-करते थक गए आप,
चीनी बीमारी ने धर लिया साथ।
आप थे समाज सुधारक और नेक इंसान,
इसीलिए आपको बुला लिए भगवान।
आज है आपका जन्म दिवस
हम करते शत्-शत् बार प्रणाम,
जबतक सूरज चाँद रहेगा
अमर रहेगा आपका नाम।

नीतू रानी
स्कूल-म० वि० सुरीगाँव
प्रखंड-बायसी
जिला-पूर्णियाँ, बिहार

ज्ञान के दीपक

शिक्षक हैं वो दीप प्रखर, जो तम को हरने आते,
ज्ञान-ज्योति की लौ बनकर, जीवन राह दिखलाते।
संस्कारों की निधि महान, वे मन में दीप जलाते,
सच्चे पथ की सीख सदा, हर शिष्य को सिखलाते।
स्वार्थ-रहित उनका समर्पण, आगे सबको बढ़ाते,
संघर्षों से न घबराना, ये साहस भी बतलाते।
सपनों को आकार दे, उम्मीदों को रंग भराते,
मेहनत, धैर्य, दया-प्रेम का अमृत भी बरसाते।
कर्तव्यपथ के रथ-सवार, सच्ची सेवा निभाते,
ज्ञान-व्रत में लीन सदा, कर्म-सुमन वे खिलाते।
मान-सम्मान से ऊपर उठ, जो सेवा में रम जाते,
ऐसे गुरु को शत्-शत् नमन, जिनसे ज्ञान बढ़ाते।

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक,
उ.म.वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

गोरैया

रोज सबेरे चूं -चूं करके हम सबके आंगन आती है।
दुनिया के सोए मानव का हृदय स्पंद जगाती है।।
एक एक तिनका को चुनकर मेहनत से घर वो बनाती है।
घर- घर जाकर चुगकर दाना बच्चों को वो खिलाती है।।
मां पिता का धर्म हो कैसा ये जग को बतलाती है।
मेहनत से तू ना घबराना हम सबको समझाती है।।
बारिश, धूप, तुफानों से परिजन को सदा बचाती है।
कर्तव्य परायणता हो कैसी ये जग वो बताती है।।
फुदक- फुदक कर दाना चुनती,शाम में घर को आती है।
समय पे सारा काम करो ये हम सबको कह जाती है।।
हिंसक पशु को देख- देख वो जोरों से शोर मचाती है।
सब मिलकर हो एकजुट वह एकता का पाठ पढ़ाती है।।
कहां गयी वो प्यारी गोरैया,नजर नहीं कहीं आती।
बचपन की यादों में हीं वो, फुदक -फुदक आती जाती।।
विलुप्त हो रही जग से चिड़िया,गंगा भी अब सूख रही।
वन्य प्राणी भी कम हो रहे, दुनिया अब दुनियां न रही।।
मानव अपने सुख के खातिर, पर्यावरण से खेल रहा।
इसलिए तन मन धन से वो ,अब नाना दुख है झेल रहा।।
पर्यावरण संरक्षण बहुत जरूरी कहती मनु सुन ओ नादान।
प्रकृति से खिलवाड़ करोगे तो जाएगी इक दिन तेरी जान।।
खुलकर उड़ती नील गगन में, दुनियां का सैर कराती है।
वह जग के बंदी मानव को, मुक्ति का मंत्र बताती है।।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी पूर्णियाँ

जभी जागो तभी सवेरा

जभी जागो तभी सवेरा,
जड़ से मिटेगा जीवन का अंधेरा।
जब खुलती है अंदर की बुद्धि,
कभी नहीं होते मंदबुद्धि।
तन मन धन से प्रभु को करो याद,
प्रभु पूरा करेंगे फरियाद।
जभी जागो तभी सवेरा,
सुबह का सूरज निकलेगा तेरा डेरा।
मनुष्य शरीर में लिया अवतार,
करो सभी जीवों से प्यार।
झूठ, चोरी, नशा,हिंसा को छोड़ों,
व्यभिचार,मोह माया से मुख मोड़ो।
जभी जागो तभी सवेरा,
जीवन में न आएगा अंधेरा।

नीतू रानी
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी जिला -पूर्णियाँ बिहार।

हिंदी है भारत की वाणी

हिंदी है भारत की वाणी,
इससे है पहचान पुरानी।
गूँजे इसके मीठे बोल,
सजे इसमें भाव सुहानी॥
हिंदी से नाता जोड़ा,
हर मन में प्रेम उभारा॥
माँ ने इससे बात बनाई,
बचपन ने इसमें ही गाई।
इसकी लोरी, इसकी गाथा,
रग-रग में रसधार समाई॥
हिंदी से नाता जोड़ा,
हर मन में प्रेम उभारा॥
मीरा-सूर-कबीर की बोली,
रसखान की कविता डोली।
तुलसी की चौपाई गूँजी,
गांधी ने जिसकी भाषा बोली॥
हिंदी से नाता जोड़ा,
हर मन में प्रेम उभारा॥
अपनी भाषा अपनाएँ हम,
विश्व पटल पर छाएँ हम।
हिंदी की महिमा गाएँ हम,
सम्मान इसे दिलाएँ हम॥
हिंदी से नाता जोड़ा,
हर मन में प्रेम उभारा॥
जय हिंदी, जय भारत!

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर,
फतुहा, पटना (बिहार)

नामांकन गीत

पप्पा नाम लिखा दो न
नामांकन करवा दो न
हम को भी पढ़ना है
जीवन में आगे बढ़ना है
रस्ता हमको दिखा दो न
पप्पा नाम लिखा दो न
ना कोई खर्चा लगेगा
ना होगी कोई परेशानी
स्कूल है टोले में अपने
जाने में है आसानी
हो जाए कहीं न देरी
जल्दी स्कूल पहुंचा दो न
खाना कपड़ा और किताबें
मुफ्त में मिलती है
हमारे सपनों की कलियां
ब्लैकबोर्ड पर खिलती हैं
चांद को छूना है मुझे
ऊंचा जरा उठा दो न
पप्पा नाम लिखा दो न

चांदनी समर उर्फ़ रिजवाना यासमीन
मध्य विद्यालय दाऊद छापड़ा मीनापुर
मुज़फ्फरपुर

समरसता हो सदा सभी में

समरसता हो सदा सभी में, शास्त्र यही बतलाता है।
शांति और सद्भाव बनाकर,मानव बस यह पाता है।।
मीठी बोली कड़वेपन का,भाव सभी हर लेता है।
रोती अंखियों में ना जानें, खुशियाँ फिर भर देता है।।
सत्य वचन जो सदा बोलता, झूठ हृदय से जाता है।
नफ़रत भरी दिलों में फिर, नेह पुष्प खिल पाता है।
वही खून जब सबके भीतर, मन क्यों नफ़रत बोता है।
अपने हीं स्वारथ में आके, अपनों को फिर खोता है।।
जाति पाति का भेद नहीं हो, धर्म यही बतलाता है।
एकसूत्र में बँधकर रहना, समरसता कहलाता है।।

मनु कुमारी

मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी,
पूर्णियाँ, बिहार

सबके दिल में मोहब्बत अमन चाहिए
मुझको हंसता हुआ इक वतन चाहिए
हिंदू मुस्लिम की बातें करे न कोई
धर्म के नाम पर यूं मरे न कोई
न ही मृतचैल न ही कफ़न चाहिए
मुझको.....
एक वो दिन था जब सब ही आबाद थे
स्वर्ण चिड़ियां थीं, उत्थान निर्बाध थे
खिलखिलाता सुहाना चमन चाहिए
मुझको.....
बन रहे हर युवा आज लाचार क्यों
हैं लालसा और मदय के तलबगार क्यों
कर्म गुण से सुगंधित पवन चाहिए
मुझको.....

श्वेता साक्षी

खगड़िया बिहार
मध्य विद्यालय हनुमान नगर
बेलदौर खगड़िया

प्रेम की शक्ति

आओ मिल हम गायें सब गीत,
है प्रेम की रीत सुहावनी भाई।
प्रेम की शक्ति अपार सुनो,
इस शक्ति से पार न दूजो है पाई।।
ढाई है आखर प्रेम सुनो,
कोई और न मंत्र सुनें रघुराई।
सेवरी के कोई काहि कहै,
जहाँ जूठन बैर खाये रघुराई।।
प्रेम की शक्ति से कान्हा हुए,
बस में कहो धाइ सुदामा बुलाई।
नयनन से बहे लोर कपोल पे,
पैर पखारि रहे हैं कन्हाई।।
प्रेम के बस में है सृष्टि ये सारी,
है प्रेम बिना कबहिं कछु नाहीं।
मीरा दुलारी तो जोगन प्रेम में,
प्रेम में राधा भईं जग जानी।।
प्रेम बिना कछु नही जग जानो,
प्रेम बिना कोई पिय की न प्यारी।
प्रेम नचावत देव ऋषि प्राणी को,
प्रेम की शक्ति चराचर जानी।।
प्रेम ही जीवन मूल है,
प्रेम ग्रंथन के सार।
प्रेम बिना कहीं कछु नहीं,
जानत सकल जहान।।

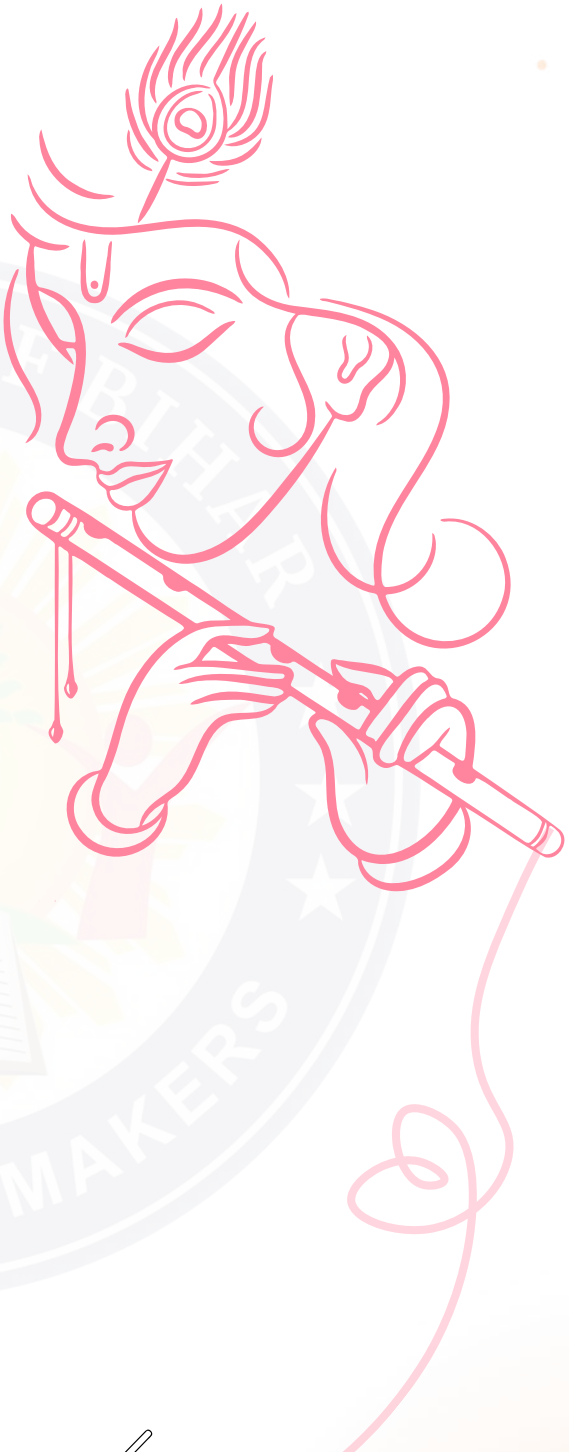

स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

शिक्षक हूँ बिहार का

शिक्षक हूँ बिहार का, ज्ञान के विस्तार का।
बच्चों का भविष्य मैं, मार्ग हूँ संसार का।।
अलख जगाता रहता, सबमें सदाचार का।
बच्चों में विचार का, कक्षा नवाचार का।।
प्रतीक हूँ विचार का, बदलते व्यवहार का।
संरचना समाज का, गुणवत्ता सुधार का।।
शिक्षक हूँ बिहार का, ज्ञान के विस्तार का।
बच्चों का भविष्य मैं, मार्ग हूँ संसार का।।
छात्र – हित लीन रहते, विविधता आचार का।
नयी प्रौद्योगिकी से, नवयुग के प्रसार का।।
सीखें और सिखाएं, परंपरा बिहार का।
लाड़ – प्यार लुटा रहें, ममत्व बेशुमार का।।
शिक्षक हूँ बिहार का, ज्ञान के विस्तार का।
बच्चों का भविष्य मैं, मार्ग हूँ संसार का।।
नित नवल विधाओं में, स्वप्न के साकार का।
हैं अंकुरित हो रहे, वृक्ष के आकार का।।
है सम्यक रूप गहें, सर्वोत्तम निखार का।
सभी आज कहते हैं, अवसर हम सुधार का।।
शिक्षक हूँ बिहार का, ज्ञान के विस्तार का।
बच्चों का भविष्य मैं, मार्ग हूँ संसार का।।
कौशल पर जोर दिए, सूचना संचार का।
मौन वहीं शोर करें, जहाँ गुरु संसार का।।
हूँ सबकी निगाह में, सौभाग्य सरकार का।
पाठक सदा कर रहा, साधना सुविचार का।।
शिक्षक हूँ बिहार का, ज्ञान के विस्तार का।
बच्चों का भविष्य मैं, मार्ग हूँ संसार का।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

बिहार: संस्कृति का समृद्ध सार

राजगृह की पावन वादियाँ, ऋषियों की तपभूमि,
गृद्धकूट की चोटी बोले, बुद्ध की अमिट प्रतीति।
सप्तधाराएँ बहती जातीं, गूंजे जहां ज्ञान-विचार,
हे मगध! तू गौरव-गाथा, तू भारत का उद्गार।
बोधगया में पीपल तले, जब बुद्ध ध्यान लगाते,
मोक्ष-पथ की ज्योति जगाकर, धर्मचक्र चलाते।
संधि, समर्पण, करुणा, शांति, सारा जग सिखलाया,
बिहार की माटी में ही, विश्व को ज्ञान दीप दिखाया।
नालंदा की वीथियाँ कहतीं, तक्षशिला संग गाथा,
जहाँ ज्ञान का अमृत बहता, खोजे नूतन मुकुटमाथा।
चाणक्य, आर्यभट्ट, नागार्जुन मगध के शिखर बोल,
शब्दों में विज्ञान खिले, सत्य बने यहां अनमोल।
वैशाली की गाथा सुनो, गणराज्य का प्रथम पुकार,
लिच्छवी की वह संस्कृति थी, जो बन गई आधार।
मातृत्व की भूमि मिथिला, सीता की वो छाँव,
जहाँ विदेहराज जनक ने, दिए दर्शन और भाव।
गया की घाटी साधकों की, विष्णुपद की शान,
पिंडदान में बसी श्रद्धा, मोक्ष की वो पहचान।

विक्रमशिला की तटवर्ती छाया, विद्या-तीर्थ महान,
जहाँ धर्मपाल के सपनों ने रचा ज्ञान-गुलदान।
तारेगना का खगोलीय दीप, आर्यभट्ट की दृष्टि,
गिनती, ग्रह, नक्षत्रों में खोजी चिर सृष्टि।
सोनपुर के मेले में, अनूठी परंपरा की बूँदें,
जहाँ लोक-धारा बहती, संस्कृति की गूँजें।
पटना की राजधानी, अत्यंत गौरव गाथा भरी,
गोलघर, सचिवालय, संग्रहालय की क्यारी।
हाईकोर्ट, विश्वविद्यालय, शहीद स्थल की बात,
इतिहास की गलियों में बसी हर जन की सौगात।
शेरशाह का सासाराम, महलों की वो रेखा,
दरभंगा की गूंज अनोखी, राजाओं की लेखा।
भागलपुर से झारखंड तक, हर कोना मुस्काए,
जब बिहार की गौरव गाथा, फिर से गीत सुनाए।
“हे बिहार! तू संस्कृति का अमूल्य भंडार,
तेरे हर कण में बसी, भारत की पहचान अपार।
ज्ञान, धर्म, शौर्य, करुणा – तुझसे ही संचार,
तू ही राष्ट्र की आत्मा है, तू ही भारत का आधार!”

सुरेश कुमार गौरव

प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना
(बिहार)

विश्व विरासत दिवस

सभ्यता का इतिहास,
मिले जानकारी खास,
करे विश्व एहसास, धरोहर पाइए।
अठारह अप्रैल को,
संस्कृति संरक्षण को,
भूतल उत्खनन को, विचार बनाइए।
सांस्कृतिक विरासत,
प्राकृतिक स्थल रत,
ज्ञान विज्ञान प्रदत, संग्रह सजाइए।
स्मारक पुरातत्त्वीय,
है शोध प्रशंसनीय,
दिवस अंतर्राष्ट्रीय, सहर्ष मनाइए।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

वन हैं धरती की पहचान

वन हैं जीवन की पहचान,
इनसे धरती रहे महान।
शुद्ध हवा औ' निर्मल पानी,
इनसे हरियाली मुस्कानी।।
पंछी गाते मीठे स्वर गान,
वन देते सबको वरदान।
फल-फूलों की यह सौगात,
सजती हर ऋतु में बारात।।
वृक्ष कटेंगे, तब संकट आएगा,
जीवन कैसे फिर बच पाएगा?
सांसें होंगी जब कमजोर,
कौन बचाएगा इसे पुरजोर?
आओ मिलकर प्रण यह लें,
इस वन महिमा को नित गहें।
रोपें पौधे, दें क्यारियों से सजा,
हरियाली से मातृभूमि बसा।।
वन न होंगे तो जल कहां?
सूखे सरिता के स्वर कहां?
वन ही तो जीवन का मान,
इनसे उज्ज्वल हो अभियान।।

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक उ.म.वि.रसलपुर,
फतुहा, पटना (बिहार)

एक छोटी चिड़िया

एक छोटी चिड़िया,
तिनका लेके आई।
एक- एक तिनके से ,
सुंदर घोंसला बनाई।
घोंसले में दी चार छोटे अंडे,
उस अंडे पर बैठ उसे गरमाई।
बड़ा हुआ अंडा फूटा निकला चूजा- चूज़ी,
चूजा -चूजी देख चिड़िया खुलके मुस्कराई।
दाना चुगने माँ चिड़िया गई ,
पीछे -पीछे गई बेटी चूज़ी।
शाम हुई माँ चिड़िया आई,
लौटकर न आई चूज़ी।
रात भर रोती रही माँ चिड़िया
नींद नहीं आई,
सुबह हुई आँखें खुली चूजी देख माँ मुस्कुराई।
एक छोटी चिड़िया,
तिनका लेके आई।

नीतू रानी
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ बिहार

दर्पण

किरणें आती जो रही, लौटाती उस ओर।
सतह परावर्तक सदा, कहलाती वह छोर।।
सतह परावर्तन करे, दर्पण उसका नाम।
वापस लौटाना सदा, होता जिसका काम।।
सतही संरचना कहे, दर्पण विविध प्रकार।
अलग-अलग गुणधर्म है, करिए भेद विचार।।
चित्र बनाएँ हू-ब-हू, बन आभासी व्योम।
लघु दीर्घ और सम सदा, दिशा कोण प्रतिलोम।।
आँखें सबको देखती, रहे खुद परेशान।
उसको भी दर्शन मिले, दर्पण कारण जान।।
सपाट जिसका तल रहे, दर्पण समतल जान।
दूरी समता बिम्ब से, देता है जो ज्ञान।।
उभरा जिसका सतह हो, उत्तल दर्पण नाम।
आवर्धित प्रतिबिम्ब का, निर्मित करना काम।।
धँसा सतह जिसका मिले, कहते अवतल लोग।
ऐसे दर्पण में बने, न्यून चित्र का योग।।
उत्तल अवतल संग में, समतल दर्पण मूल।
मिश्रित कर अनेक बने, करता यंत्र कुबूल।।
कोण आपतन है सदा, परावर्तन समान।
इस गुण के उपयोग से, बनता यंत्र विधान।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

पिता

परमपिता परमेश्वर हैं, हम सब उनके संतान,
उन्हीं की अनुकम्पा से, हम सब सदा क्रियमाण।
सबसे पहले परमपिता परमात्मा को प्रणाम,
उन्हें वन्दन, उनका स्तवन, पुण्यप्रद उनके नाम।
पिता अनुशासन है, पिता उदाहरण है,
पिता ही प्रेरणा है, पिता दुख निवारण है,
पिता अपने संतानों का साहस है,
एक शब्द में कहूं तुलसी का मानस है।
पिता परिवार का पालक है,
हर परेशानियों का निवारक है,
उनका एक-एक वचन प्रेरक है,
वे गुरु हैं, अच्छे संदेशों का वाहक है,
वे शिक्षा देते, मनुष्य बनकर आये हो,
परिवार, समाज, राष्ट्र के तुम आना काम,
उत्साह, साहस, निष्ठा के साथ दायित्वों का पालन करना,
शुभ और श्रेष्ठ कार्यों में ही बिताना अपनी जिंदगी तमाम।
अच्छा उस्ताद नहीं, अच्छा शागिर्द हमेशा बने रहना,
जहां से भी हो, अच्छी शिक्षा सदा तुम लेते रहना।
आत्म-सुधार, आत्म-प्रगति के संग पर-उपकार सदा करना,
अपने शुभ कार्यों से मानव समाज के लिए दृष्टांत बनना।
सभी पिताओं को मेरा प्रणाम,
है प्रेरक उनका वचन, उनका नाम ।

गिरीन्द्र मोहन झा
+2 भागीरथ उच्च विद्यालय, चैनपुर-पड़री, सहरसा

जीने का अधिकार

जीने का अधिकार है, सबको एक समान।
जीव-जंतु सबका करें, रक्षा बन बलवान।।१।।
रखिए हरपल हीं यहाँ, दीन-हीन का ध्यान।
जीने का अधिकार दे, और उन्हें सम्मान।।२।।
जीने का अधिकार तो, सबको है दिन रैन।
मूरख क्योंकर छीनता, स्वार्थ भाव बेचैन।।३।।
करता विचार है नहीं, बनता है नादान।
जीने का अधिकार है, ईश्वर का वरदान।।४।।
जीव-जंतु सब एक- सा, समता सबकी जान।
अहं भाव मत पालिए, करिए न परेशान।।५।।
कण-कण में भगवान है, समझे जो इंसान।
जीने के अधिकार को, लेता उर से मान।।६।।
पूरी करते चाह को, भूल रहा इंसान।
सबका है अधिकार यह, बनिए जरा सुजान।।७।।
मूरख मद में जो रहे, रखें दुष्ट का ज्ञान।
करता जीवन है हनन, समझे खुद की शान।।८।।
कौन यहाँ है मानता, सबको एक समान।
जीने के अधिकार से, जीवन हो आसान।।९।।
पाठक वंदन कर कहे, कहना मेरा मान।
जीने का अधिकार दे, बनिए कृपा निधान।।१०।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

जल से भरकर पात्र को
रखना निशदिन भाय,
आएगी चिड़िया पानी पीने
जाएगी प्यास बुझाय।
पीती है पानी चिड़िया
हृदय से निकलता धन्यवाद,
जो पानी पिलाने का पुण्य करता
वह लेता सबसे आशीर्वाद।
ठंढा- ठंढा पानी देख
रोज चिड़िया करती स्नान,
स्नान कर पूजा करती
करती प्रभु का ध्यान।
गर्मी में प्यासे जीव को
जो ठंढा पानी पिलाता है,
वह बड़भागी प्राणी है
जो सीधे स्वर्ग को जाता है।

नीतू रानी
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ बिहार

बाल कविता – पेंसिल

पेंसिल की है बात निराली,
चलती है यह काली काली।
अब तो रंग बिरंगी है आती,
बच्चों का मन खूब है भाती।
जो मन आये वो लिख पाएँ,
गलत होने पर उसे मिटाएँ।
सरल भाव में चित्र बनाएं,
घीस-घीसकर छाप चढ़ाएं।
रहती काष्ठ के अंदर यह,
बहुत लंबी है चलती यह।
कागज हो या कोई सतह,
अपनी छाप है छोड़ती यह।
इसकी कीमत बहुत ही कम,
टूटे भूले नहीं कोई गम।
लेखनी बनती सुंदर हरदम,
सिखाती है पीसने का दम।
बच्चे संग बड़े को भाती,
अस्थायी अंकन करवाती।
पेंसिल को यह खूब सुहाती,
फूले नहीं कभी समाती.

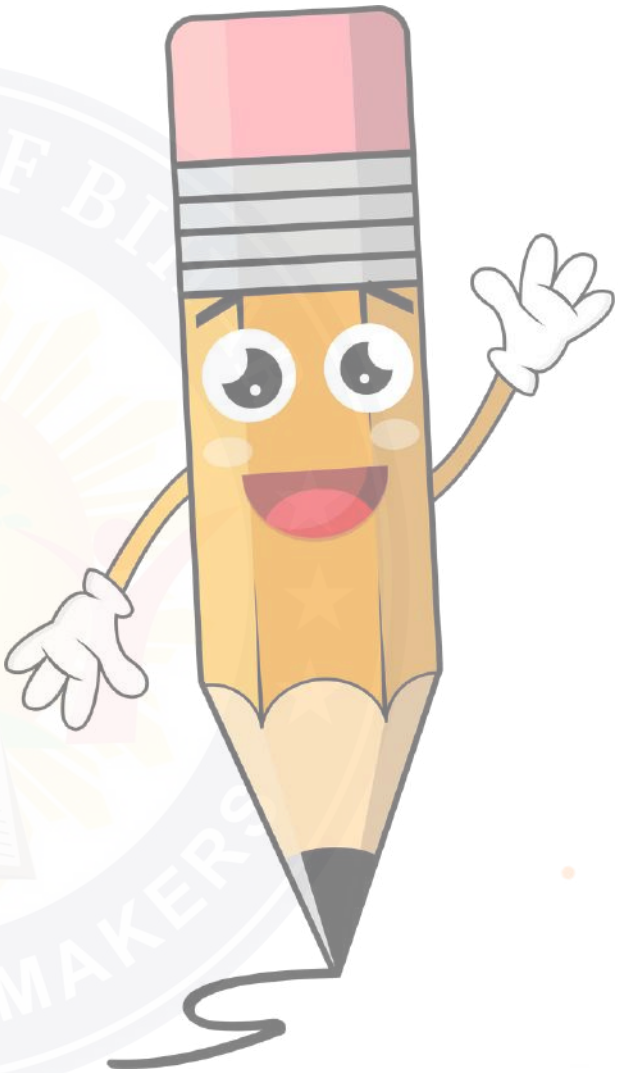

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

हम हैं टीचर्स ऑफ़ बिहार

शिक्षा का हम दीप जलाते।
अज्ञान तिमिर को दूर भगाते।
नैतिकता का पाठ पढ़ाते।
स्वयं का उसको बोध कराते।
करते बच्चों में हर-दिन हम,
नव आशाओं का संचार ।
हम हैं टीचर्स ऑफ बिहार। ।
हम बाधाओं से नहीं घबराते।
हर मुश्किल में राह बनाते।
पानी पड़े या तुफां आएँ।
बाढ़ में नदी पार कर जाएँ।
जीवन की हर चुनौती को ,
कर लेते हैं हम स्वीकार ।
हम हैं टीचर्स ऑफ बिहार।।
कहानी कविता उसे सुनाते,
परी लोक की सैर कराते।
कभी कबड्डी कभी खो -खो।
तरह तरह के खेल खेलाते।
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए ,
हम करते प्रयोग नवाचार।
हम हैं टीचर्स ऑफ बिहार।।
बच्चों से पेंटिंग बनवाते ।
रोल प्ले भी खूब कराते।
अंधविश्वास को दूर भगाते।
उनमें वैज्ञानिक सोच बढाते।
बच्चों के संग घुल-मिल कर ,
हम करतें बातें हजार।
हम हैं टीचर्स ऑफ बिहार।।
बाल अधिकार की बात सिखाते।
“स्वास्थ्य हीं धन” है उन्हें बताते।
शिक्षा का महत्व है देखो कितना
प्रेरक प्रसंग से हम समझाते,
मूल कर्तव्य की बातें कहकर ,
बतलाते संस्कृति और संस्कार।
हम हैं टीचर्स ऑफ बिहार

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका मध्य विद्यालय सुरीगाँव , बायसी, पूर्णियाँ

जीने का अधिकार

सभी जीव को है यहां,जीने का अधिकार।
हक उसका मत छीनिए ,करिये केवल प्यार।।
बेटी को यूं कोख में, मत मारो तुम यार।
ईश्वर की वह देन है,करो उसे स्वीकार।।
हिंसा है सबसे बड़ी, इस दुनियां में पाप।
जीने का हक छीनके,मत लो उसका श्राप।।
पशु पंछी हर जीव में, रहता है भगवान।
मत मारो तुम जीव को, मत लो उसकी जान।।
ईश्वर ने जब दे दिया,जीने का अधिकार।
फिर क्यों उसको मारकर, पाप करे तू यार।।
पर सेवा सम है नहीं,सुख दुनियां में मीत ।
पर पीड़ा को छोड़ तू,होगी तेरी जीत।।

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका मध्य विद्यालय सुरीगाँव , बायसी, पूर्णियाँ

प्रगति तुम बढ़े चलो

प्रगति तुम बढ़े चलो, नयन स्वप्न गढ़े चलो,
अंधेरे हटा के तुम, नयी भोर गढ़े चलो।
धरा से गगन तलक, पताका चढ़े चलो,
प्रगति तुम बढ़े चलो, प्रगति तुम गढ़े चलो।
बड़े लक्ष्य हों अगर, कठिन राह क्या भला,
जला लो दृढ़ निश्चय, न कोई डरे चला।
हृदय में विश्वास हो, दृष्टि में हो दृढ़ बल,
विघ्न चाहे जितने हों, न रुकना एक भी पल।
सृजन की कहानी में, हो दीप जैसे तुम,
न हो मायूसी कभी, उम्मीद जैसे तुम।
धरा भी करेगी नमन्, गगन भी झुकेगा,
विकास का रथ लिए, नव युग संकल्प सजेगा।
हर कदम पर गर्जना, हर चरण में जयघोष,
कर्म-पथ के योद्धा बनो, हो न कोई क्लेश-दोष।
रुको मत थको नहीं, है समय की पुकार,
प्रगति का हो श्रृंगार, सजे देश और संसार।
प्रगति तुम बढ़े चलो, सपन संजोए चलो,
श्रम से सजी धरा, स्वर्ग से भी हो भलो।
हर मन में जले उमंग, हर पथ बने सरल,
प्रगति तुम बढ़े चलो, प्रगति तुम गढ़े चलो।

सुरेश कुमार गौरव,
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना
(बिहार)

मुट्ठी में आकाश करो

इक-इक पल है कीमती जानो
स्वयं से तुम संवाद करो।
व्यर्थ की बातों में उलझकर
न वक्त अपना बर्बाद करो।।
मिलती सफलता उसको निश्चित
जिसने चित्त में ठाना है।
अंतक भी रास्ता रोक ना सका
जिसने खुद को जाना है।।
मत करो प्रतीक्षा अगले क्षण की
करना है जो आज करो।
समय बहुत है पास हमारे
इस सोच का तुम त्याज्य करो।।
कर लो वादा स्वयं से आज तुम
नहीं कभी भरमाओगे।
करोगे ना पीछे पग को कभी
ना ही तुम घबराओगे।।
उठो चलो और चलते चलो
संघर्षों का आगाज करो।
साधोगे लक्ष्य को अवश्यमेव
स्वयं पर तुम विश्वास करो।।
समय को कोई रोक सके
ऐसा संभव हो न पाया है।
जिसने समय का साथ निभाया
वो सिकन्दर कहलाया है।।
उठो बढ़ो और बढ़ते जाओ
स्वयं का तुम विस्तार करो।
हाथ बढ़ा कर सुन मेरे वत्स
अब मुट्ठी में आकाश करो।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मध्य विद्यालय बाँक,जमालपुर

जागो, उठो समय है पुकारता

उठो जवानों, चलो बनाओ,
नव युग का इतिहास रचाओ।
हौसलों से भर दो धरती और गगन,
हर दिशा में करो आलोकित जीवन।
तुम हो शक्ति, तुम हो रणवीर,
तुम्हीं में छुपा है संसार का नीर।
हर सपने को साकार करो,
आलस त्याग, कर्म का भार भरो।
जागो, उठो, समय है पुकारता,
हर युवा में इतिहास निखारता।
ज्ञान का दीप जलाकर चलो,
अंधियारे को मिटाकर चलो।
नहीं हार मानो, न रुकने दो पथ,
हर कण में भरो नवल उत्साह।
तुम्हारे हाथों में है जगत का भव,
तुमसे ही है यह देश नव।
न कोई बाधा, न कोई सीमा,
तुम्हारे आगे झुके हर दीमा।
सपनों को हकीकत में बदल दो,
अपनी शक्ति से दुनिया हिला दो।
युवाओं, चलो देश संवारें,
नई रीत-नीति का दीप जलाएं।
विवेकानंद का स्वप्न सजाएं,
भारत को फिर विश्व गुरु बनाएं।

सुरेश कुमार गौरव
प्राचार्य, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

बिन शिक्षक वैभव अधूरा

शिक्षक की गोद में पलता,उत्थानों का भाव।
जिसकी पीठ पकड़ कर चलता,पड़ता देश प्रभाव॥
बोए बीज वही बन जाता,वटवृक्षों का नाम।
उसकी छाया में संवरता,जन-जन का अभिराम॥
काल की गति मोड़ सके जो,ऐसा ज्ञानी वीर।
धरती-अम्बर जोड़ सके जो,शिक्षक ही अधीर॥
बिन शिक्षक वैभव अधूरा,सूनी सी धरती।
उसके बिना न खिलती कोई,ज्ञान-पुष्प की क्यारी॥
चाणक्य ने रचा इतिहास,मगध माटी में मिलाया।
बालक चंद्रगुप्त को,चक्रवर्ती सम्राट बनाया॥
सदियों से बनते गुरु,संदीपन से लेकर कृष्ण।
शिक्षक बीज बुनें जो,जग पाए सत्व, तेज, तीक्ष्ण॥
शिक्षक से ही अर्जुन पाता,धनुर्विद्या में मान।
गुरु द्रोण के नयनों ने ही,रचा एक महायान॥
राम बने थे बालक,शिव-शक्ति से जो शोभे।
शिक्षक की उपेक्षा कर जो,वो रावण भी कहलावे॥
हम सबको यह भाग्य मिला है,शिक्षक का सम्मान।
गुरु बनकर जिम्मेदारी, थामी कर्म रुपी अधिमान ॥
संकल्प करें आज यही,अपना फर्ज निभाएँ हम।
भारत को फिर गुरु बनाएँ,ज्ञान दीप सजाएं श्रेष्ठ तम॥
गर्व करेंगे हर पल अपने,शिक्षक-पद के नाते।
सच्चे कर्मों से जग में,दीप शिक्षा के जलाते॥
भारत माँ के लाल सभी,ज्ञान-वृक्ष बन जाएँ।
सच्चा शिक्षक बन समाज को,पथ पर अग्रसर लाएँ॥

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक,
उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

यह चिड़िया कहाँ रहेगी

बोलो अब मैं कहाँ रहूँगी
बच्चे मेरे कहाँ रहेंगें
आती है हम सब से कहने
अपनी चीं चीं मधुर आवाज में
कभी कभी यह मधुर कलरव से
जैसे शिक्षक समझाते हों
फिर चिल्लाती करकस भाव में
जैसे हमसे झगड़ रही हो
पेड़ों को जो काट रहे हो
बोलो अब मैं अब कहाँ रहूँगी ।
वन फुलवारी काट काट कर
आसियां जो तुमने बनवायी है
ऐसे में तुम सांस लेने को
शुद्ध वायु कहाँ से ला पाओगे
पेड़ों को जो तुमने काटा
उससे मेरे घोंसले टूटे
चूजे निकलने से ही पहले
उससे मेरे अंडे फूटे
मेरे बच्चे कहाँ रहेंगे
बोलो अब मैं कहाँ रहूँगी ?
अपनी चीं चीं मधुर कलरव से
पूछ रही है चिड़िया हमसे
नदियों और झरनों को मारकर
कंक्रीटों के तुम ऊगा के जंगल
ऐसे में जब प्यास लगेगी
कहाँ से जल तुम शुद्ध लाओगे ?
पेड़ों को जो काट रहे हो
बोलो अब मैं कहाँ रहूँगी ?
ऐसा तेरे साथ बीतेगा
बताओ तुमको लगेगा कैसा
बोलो तब तुम कहाँ रहोगे ?
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी
बोलो चिड़िया कहाँ रहेगी ?

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया

बदलें बिहार आओ

शिक्षक सभी हमारे, बदलें बिहार आओ।
शिक्षा दीप जलाओ, ज्ञान पुंज फैलाओ।।
प्रण यह करने आओ, औरों को समझाओ।
जीवन जीने आओ, जीना भी सिखलाओ।।
अंतस अभी जगाओ, सपनें सच कर पाओ।
है अज्ञान घनेरा, सूरज सा बन जाओ।।
शिक्षक सभी हमारे, बदलें बिहार आओ।
शिक्षा दीप जलाओ, ज्ञान पुंज फैलाओ।।
अपनी डफली लाओ, सबकी राग सुनाओ।
परिंदे को नन्हे से, बाज बनाने आओ।।
सुरों को तुम सुनाओ, साज उन्हें सिखलाओ।
पन्ने कोरे-कोरे, जीवन रंग चढ़ाओ।।
शिक्षक सभी हमारे, बदलें बिहार आओ।
शिक्षा दीप जलाओ, ज्ञान पुंज फैलाओ।।
बच्चें कोमल होते, इन्हें प्यार से समझाओ।
ये हैं कलियां प्यारी, उपवन अब महकाओ।।
कल के यही सितारे, इनको गगन बिठाओ।
रौशन जग कर पाएं, सूरज इन्हें बनाओ।।
शिक्षक सभी हमारे, बदलें बिहार आओ।
शिक्षा दीप जलाओ, ज्ञान पुंज फैलाओ।।
ये आसरे हमारे, उस आस को बचाओ।
ये नौनिहाल बच्चे, इनमें लगन जगाओ।।
आदर्श हमीं होते, यह बात समझ जाओ।
छोड़ों सारी बातें, माँ जैसी बन जाओ।।
शिक्षक सभी हमारे, बदलें बिहार आओ।
शिक्षा दीप जलाओ, ज्ञान पुंज फैलाओ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

मुन्नी रोज आती स्कूल

मुन्नी रोज आती स्कूल,
लेकिन आज रास्ता गई भूल।
रास्ते में बैठकर रो रही थी,
आँसू से मुख को धो रही थी।
किसी ने कहा उसकी मम्मी से,
उसकी मम्मी का घर था दूर।
मुन्नी रोज आती स्कूल,
लेकिन आज रास्ता गई भूल।
दौड़ी -दौड़ी मम्मी आई,
मुन्नी को गोदी में उठाई।
मम्मी ने स्कूल पहुँचाई,
मैडम ने उसको चॉकलेट खिलाई।
मैडम को एक से सौ तक, लिखके दिखाई,
एक से सौ तक में कुछ गिनती गई भूल।
मुन्नी रोज आती स्कूल,
लेकिन आज रास्ता गई भूल।

नीतू रानी
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ बिहार।

विद्यालय की जुदाई

आया था जब मैं यहां पर
एक अजनबी सा बनकर
था अकेला, मायुस बैठा
खूद में ही खूद सिमटकर
न था किसी से परिचित
न था मैं किसी से बेहतर
सपने हैं कुछ अटल जो
थे , लाए यहां खिंचकर
शुरू हुआ जो दौर पढ़ाई का
हम सब ने पढ़ा मन लगाकर
शिक्षक भी देते साथ बहुत ही
ससमय वर्ग – कक्ष में आकर
थी जूनून सब में अजब निराली
करना है कुछ, आगे निकलकर
बन गया प्रतिस्पर्धा का माहौल
हम सभी सहपाठियों में अक्सर
तीन साल की अवधि होई है फूर्र
मन हो रहा है मायूस ये सोचकर
साथ छुट रहा है अब दोस्तों का
फिर कब मिलेंगे यहां से निकलकर
विद्यालय ये तेरा है ,एहसान मुझपर
तूने किया है धन्य शिक्षादान देकर
मैं रखुगा सदैव आत्मसम्मान तेरी
ये है मेरा प्रण मेरे प्राण से बढ़कर
वो दौर भी तो कुछ और था
जहां से शुरू की थी सफर
प्यारे विद्यालय तेरी ये जुदाई
नागंवार गुजर रही है हमपर
ना चाहते हुए भी वो दिन आ गया
जब जाना ही पड़ेगा सब छोड़कर
खुश रहना ऐ मेरे स्कूल वासियों
चलता हूं अब मैं अलविदा कहकर

एम० एस० हुसैन "कैमूरी"
उत्क्र० मध्य विद्यालय छोटका
कटरा मोहनियां कैमूर बिहार

माता पिता के चरणों में

माता -पिता के चरणों में संसार है,
वही तो मेरे खुशियों के आधार हैं।
गोद में जिनके खेले हमने बचपन में ,
जिनसे घर आंगन में छायी बहार हैं।
रोने पर जो मुझे सुनाती थी लोरी,
और देती थी जो अमृत की धार हैं।
सहनशीलता और ममता की मूरत वो,
हमपे लुटाती जो हर पल हीं प्यार है।
जिनके कांधे पे देखे सारी दुनियाँ,
मेरे सुख में दुख काटे जो हजार हैं ।
सदाचार की राह मुझे बतलाए जो
जिनके बिना मेरा कर्म -धर्म बेकार है।
हिम्मत,साहस,धैर्य और मर्यादा की,
पाठ पढ़ाए जिसने हमें हर बार है।।
माता- पिता को कष्ट ना देना तुम यारों
उनके चरणों में हीं स्वर्ग का द्वार है।।

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी पूर्णियाँ

ॐ ब्रम्ह का स्वरूप

संगीत प्रकृति का ॐ सुनो,
अनहद का यह नाद सुनो।
खुद में खुद के होने का भी,
सुर सुंदर ओंकार सुनो।
कहाँ शुरू यह जीवन होगा,
अंत कहाँ है प्राण सुनो।
ब्रम्ह का रूप है ॐ यहाँ पर,
मानव भी साकार सुनो।
ॐ ब्रम्ह है ॐ ही शिव है,
ॐ , ॐ का नाद सुनो।
ध्वनि नहीं थी कहीं तनिक भी,
तब था ॐ का गान सुनो।
कण कण में है ॐ समाया,
सुबह सुनो या शाम सुनो।
घट घट पल पल जीवन पाहन,
सब में ॐ ही ज्ञान सुनो।
ॐ शक्ति है ॐ भक्ति है,
शिव और शक्ति साथ सुनो।
ॐ स्वयंभू अवतरण धरा पर,
आठ प्रहर आयाम सुनो।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,कटिहार

हमारी धरती

धरती है जीवन का आधार ,
आओ मिलकर करें विचार ,
मानव क्यों कर रहा निष्ठुर व्यवहार,
धरती कर रही अब यही पुकार ।
पृथ्वी दिवस का है यह संदेश,
पर्यावरण की रक्षा करे सारा देश,
पेड़ – पौधे का हम पर है उपकार,
घरती माँ का करे यह श्रृंगार ।
धरती बचेगी, तभी हम सब बचेंगे,
इसके बिना हम कैसे रह सकेंगे,
जीव – जन्तुओं का है आवास,
रखे सुरक्षित इसे, मिल करें प्रयास ।
हम सब मिलकर धरती बचायेंगे,
जीवन में आगे बढ़ते जायेंगे,
हम अपना कर्तव्य निभायेंगे,
सबको जागरुक करते जायेंगे ।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरभंगा
बिहार

हम सब धरती की संतान हैं

विश्व को बनाएं सुसंगठित परिवार,
अपनी धरा को दें खुशियाँ अपार।
हर चेतना में करें नव ऊर्जा का संचार,
धर्म और सहिष्णुता का करें विस्तार।
धरा की गरिमा, एकमात्र जगत कल्याण है –
क्योंकि हम सब धरती की संतान हैं।
हर मानव को हो मानवता से प्यार,
जग कल्याण हेतु आवश्यक यह विचार।
प्रेम, दया, सम्मान से बढ़कर न कोई उपहार,
सभी जीवों के प्रति हो शुभता व्यवहार।
भावों का दीप जला मन में – सर्वश्रेष्ठ काम है,
क्योंकि हम सब धरती की संतान हैं।
धरा का मान बढ़ जाए, करें ऐसे कार्य,
मनन-चिंतन करें, करें दूर मन के अंधकार।
धर्म की राह पर चलें सदैव बारम्बार,
स्वयं में स्वयं को ढूंढ़ें, मिले जीवन का सार।
अलौकिक दिव्य शक्तिपुंज मन में विद्यमान है,
क्योंकि हम सब धरती की संतान हैं।
अमिट सी छाप छोड़ दो, निभाओ हर किरदार,
धारण करो अपने हृदय पर परम सत्य अलंकार।
कसिदे की कमी और त्याग दो मिथ्या अहंकार,
करो शुभ कर्म – खुल जाएंगे निश्चित मोक्ष के द्वार।
मनुष्यता होना ही हमारा अभिमान है,
क्योंकि हम सब धरती की संतान हैं।

नूतन कुमारी
मध्य विद्यालय चोपड़ा बलुआ, पूर्णिया, बिहार

मिल जुलकर ये प्रण दुहराएं

आओ सब हम मिलजुलकर ये प्रण दुहराएं,
हरित धरा के लिए सदा प्रयत्न हम कर जाएं।
अनावश्यक पेड़ों की कटाई पर रोक लगे,
अपने जीवनकाल में पेड़ अवश्य लगाएं।
विकास की देखो कितनी बढ़ रही रफ़्तार,
इस बढ़ती रफ़्तार से होती समस्या अपार।
बढ़ता प्रदूषण – रोकथाम का एक विकल्प,
पेड़-पौधों और हरियाली से युक्त हो संसार।
जनसंख्या नियंत्रण का करें मिलकर उपाय,
उपलब्ध संसाधनों को बर्बादी से बचाएं।
जीवन सुरक्षित हो, इसके लिए करें प्रयत्न,
शुद्ध हवा मिले, इसके लिए पेड़ लगाएं।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ, गुठनी, सिवान, बिहार

कुंवर सिंह: बलिदान की गाथा

जय-जय वीर कुंवर बलिदानी,
भारत माँ के भक्त स्वाभिमानी।
अस्सी वर्ष में भी थी ललकार,
शौर्य-ध्वजा उठा कर दी यलगार।।
शस्त्र उठाया, धर्मयुद्ध रचाया,
फिरंगी अंग्रेज़ों को हरकाया।
धरती गरजी, गगन पुकारा,
“अब न होगा तेरा गुज़ारा!”।।
बिहार भूमि की वह शान थे,
सच्चे रघुवंशी की जान थे।
जगदीशपुर की पावन निशानी,
गूँजे जिसकी अमर कहानी।।
1857 की प्रथम क्रांति में,
जाग उठे वह प्रदीप्त कांति में।
पल-पल जीवन हुआ समर्पण,
भारत माँ के चरणों अर्पण।।
कट गया हाथ, पर न रुके वो,
धर्मयुद्ध में आगे बढ़े वो।
गंगा में जब हाथ बहाया,
बलिदानी का दीप जलाया।।
सत्य, साहस, त्याग, समर्पण –
कुँवर सिंह का यश है अर्पण।
हर पीढ़ी को राह दिखाते,
बलिदानों से गीत रचाते।।
हे कुंवर सिंह, नमन तुम्हारा,
तेज तुम्हारा, दीप हमारा।
जब-जब यह राष्ट्र पुकारेगा,
तब-तब नाम तुम्हारा गाएगा।।

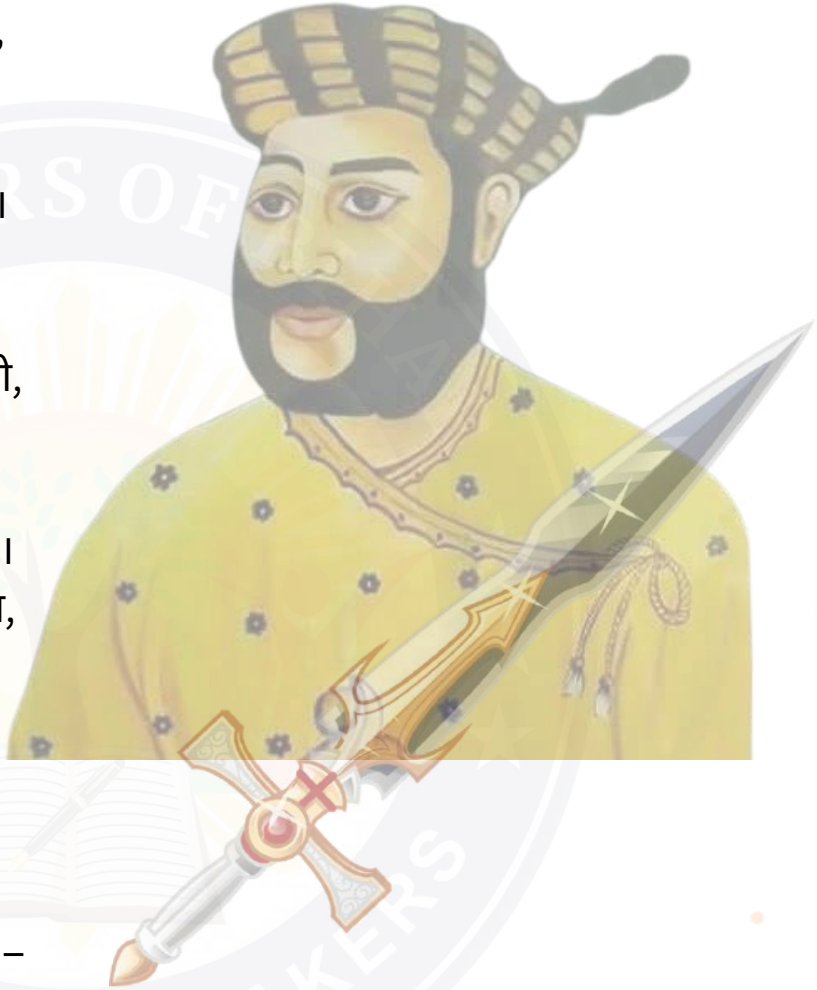

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक
उ.म.वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

शहर की चीख

धक्के खाते लोग,
दर-दर भटकते लोग,
जहरीली हवा निगलते लोग,
सपनों को रौंदते–कुचलते,
एक-दूसरे से आगे निकल जाने की चाह में
अपराध की सीढ़ी चढ़ते लोग,
सुकून की तलाश में आफत मोल लेते लोग।
भूख से बिलखते नन्हे चेहरे
को पीठ पर लादे,
हाथ पसारती बेबस माँ।
रेड लाइट होने पर
ज़ेब्रा क्रॉसिंग पर खेल दिखाकर
पेट भरने को बेबस–लाचार बच्चे।
अट्टालिकाओं में क़ैद,
बाल-श्रम को मज़बूर,
कोड़े सहते हज़ारों बच्चे।
रोज़ अपनों की तलाश में
चौकी लगाते,
रोते–बिलखते परिजन।
अकेलेपन की घुटन में
अपने को ढाँपते–छिपाते अनगिनत लोग।
धुएँ में घुटती साँसें,
थककर रुक जाने को आतुर।
पर साँसों की क्या कीमत –
नहीं समझते लोग,
मजबूरी की अथाह चादर में लिपटे असीमित लोग!
शायद यह शहर कुछ और कहना चाहता है?
नहीं – यह शहर अभी बहुत कुछ कहना चाहता है।
नहीं – यह शहर सब कुछ कहना चाहता है।

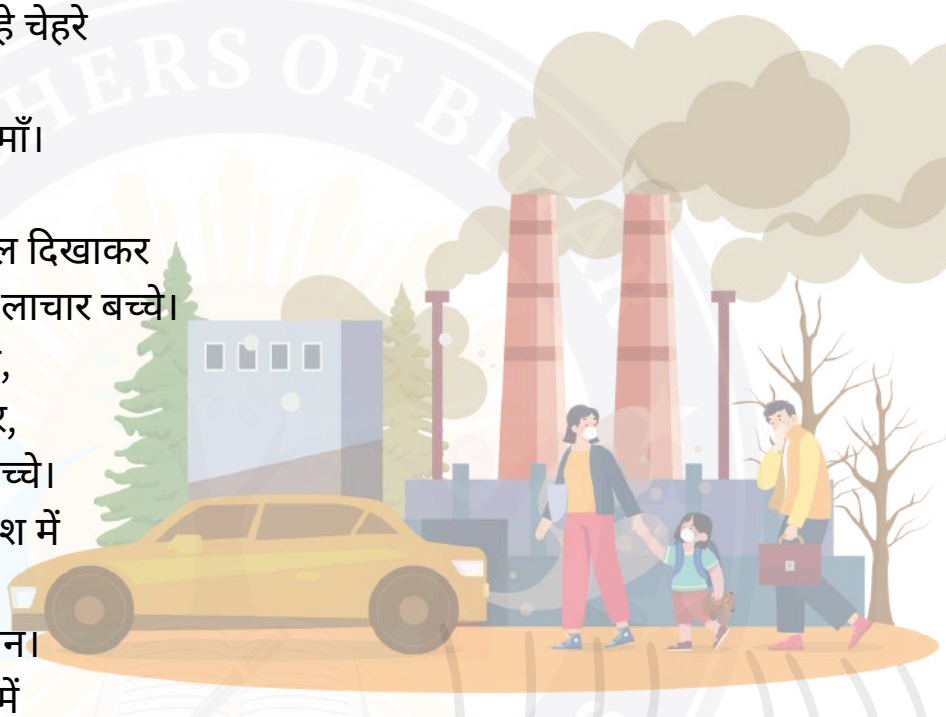

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा (शोध व अध्यापन उपसंवर्ग)
व्याख्याता, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, विष्णुपुर, बेगूसराय

धरती माँ की पुकार

धरती माँ की बेहद करुण कहानी,
सुन लो हे मानव! मत करो नादानी।
पेड़ कटे, नदियाँ सूखीं, ज़मीन हुई कम,
हरियाली की आशा — झूठी दलील दिए तुम।।
साँसें बोझिल, वायु भी हुई ग़मगीन,
नीला अम्बर हुआ धीरे-धीरे रंगहीन।
जंगल जलते, पर्वत रोते, वृक्ष कटते,
पक्षी पलायन कर धरती से खोते।।
हे मानव! तूने ही यह रूप संवारा,
फिर क्यों तूने इसका रूप बिगाड़ा?
तेरे कर्मों की ही मिली प्रतिछाया,
पृथ्वी पर संकट गहरा आया।।
अब भी जागो, वक्त यही है,
प्रकृति-रक्षा, धर्म भी सही है।
पेड़ लगाओ, जल को बचाओ,
पृथ्वी पर फिर से प्रेम रचाओ।।
प्लास्टिक त्यागो, सौर अपनाओ,
हर जीवन के साथ निभाओ।
मत करो इसका शोषण अब,
धरती माँ का हो अनुकरण सब।।
चलो मिलें, संकल्प करें हम,
हर दिन को पर्यावरणमय बनाएं।
विश्व पृथ्वी दिवस की जय हो,
धरती माँ सदा सुखदायिनी कहलाए।

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

पृथ्वी को सुरक्षित करें

आओ हम सब मिलकर एक नया प्रयास करें।
पृथ्वी भी होती है दुखित, इसका आभास करें।।
हम सब तो अपने स्वार्थ में भूल ही बैठे हैं,
वनों को ही काटकर बंगले बनाए बैठे हैं।।
जब पृथ्वी नहीं रहेगी स्वच्छ एवं सुरक्षित,
तो हम सब कैसे रहेंगे स्वस्थ और सुरक्षित?
अब यह सोचकर हम क्यों हो रहे हैं कुंठित?
ये तो होना ही था, जब पृथ्वी हो रही है प्रदूषित।।
जब इस पृथ्वी को स्वच्छ बनाना होगा,
तब तो हर संभव वृक्ष लगाना ही होगा।।
जब पृथ्वी को प्रदूषित होने से बचाना है,
कर लो प्रण—घर में पॉलीथीन नहीं लाना है।।

एम० एस० हुसैन "कैमूरी"
शिक्षक सह युवा कवि, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, छोटका कटरा, मोहनियां, कैमूर

वसुधा पुकारती

तड़ाग में भरा पंक,
अब खिलेगा सारंग,
पुष्प पर बैठे अलि,
बना है शरारती।
लुभावने लग रहे,
ऊँचे-ऊँचे तरुवर,
छोटे-मोटे वृक्षों पर,
फैल रही मालती।
प्रकाश की तलाश में,
जला रहे वनचर,
मानवों ने भूल किया,
प्रकृति कराहती।
बरसते अंबर से,
जल की शीतल बूंदें,
होकर करूणामय,
वसुधा पुकारती।

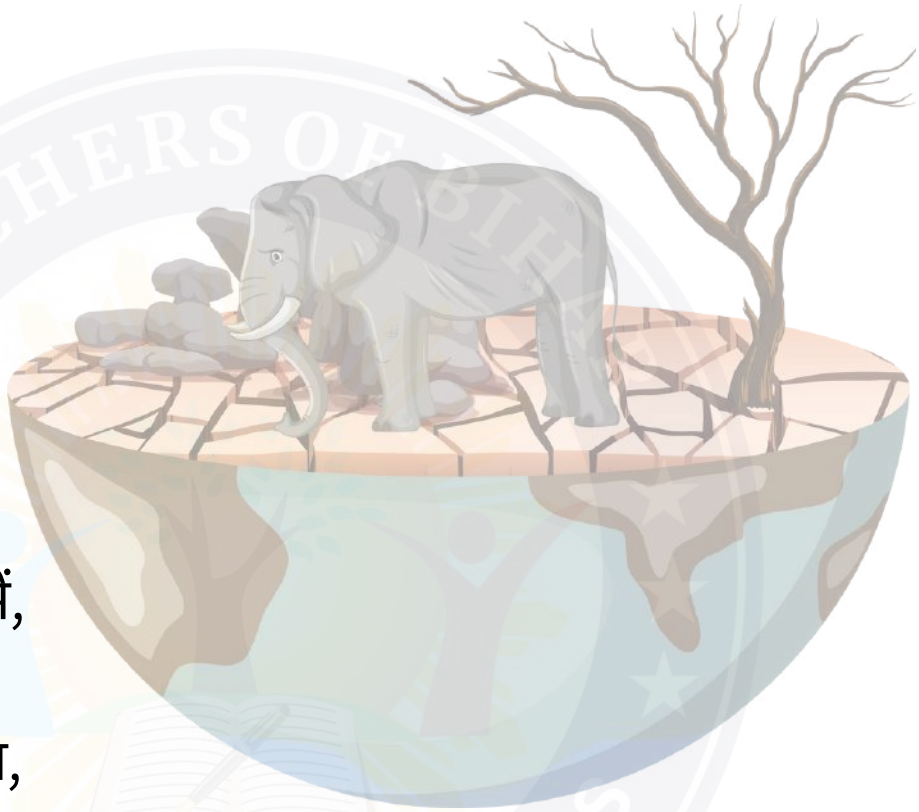

एस. के. पूनम
फुलवारी शरीफ,पटना

विधा: दोहा

पृथ्वी दिवस मनाइए, लेकर नव विश्वास।
जन-जन को जागृत करें, पेड़ लगाएँ पास।।
हरित दिखे धरती सदा, ऐसा लें संकल्प।
वृक्षारोपण में कभी, जोश न हो अल्प।।
पादप अपने हाथ रख, आज करें संकल्प।
इसमें ही सुख-शांति है, कभी न हो यह अल्प।।
तरुवर पुत्र समान हैं, मिलती इनसे शांति।
रखें सुरक्षित सर्वदा, तभी मिलेगी कांति।।
नित्य प्रदूषण बढ़ रहा, चिंतित सकल समाज।
स्वयं क्यों नहीं पूछता, मिला कर्म फल आज।।
हरित बनाएँ मन सदा, फैलाएँ संदेश।
हरियाली में शांति है और सुखद परिवेश।।
काटेंगे यदि वृक्ष तो, नहीं मिलेगी छाँव।
राही को सुख राह के, नहीं मिलेंगे ठाँव।।
होती धरती तप्त जब, तभी विटप की याद।
स्वयं मनुज करते नहीं, अंतस् से संवाद।।
अपने पावन हाथ से, करिए सुंदर काम।
पेड़ लगाकर हम सभी, रखें धरा अभिराम।।
नहीं वर्ष में एक दिन, वृक्ष लगाएँ आप।
लगा विटप हर मास में, छोड़ें अपनी छाप।।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय, धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

॥ जय श्री राम ॥

राम नाम है शीर्ष जगत में,
यह खुशियों का आगार है।
भज ले रे मन मीत मेरे,
बिन इसके सब बेकार है।
चाहते हैं कुछ अच्छा करना
राम नाम पहले गायें।
मर्यादा में यदि रहना हो तो
सम्मुख उन्हें सदा पायें।
किससे कैसी प्रीति निभानी,
हम सबने यह लेखा है।
गुणगान करते भाई भरत का,
हर बार प्रभु राम को देखा है।
भले के लिए वे भले बने हैं,
कालों के महाकाल हैं।
दुश्मनों के वे छक्के छुड़ाते,
अवध के श्री भाल हैं।
जनकपुर में जाकर राम ने,
शिव का धनु भी तोड़ा है।
जनक दुलारी सिया संग से,
पिया का नाता जोड़ा है।
पिता वचन सत्य करने को
हँसते-हँसते वन जाते हैं।
कष्ट बहुत ही वन में होते,
पर तनिक न घबराते है।
वन में है संघर्षों की गाथा,
पर स्वपीड़ा नहीं बताते हैं।
पर ऋषि मुनियों का कष्ट देख,
वे द्रवित जल्द हो जाते हैं।
ऋषि मुनियों की रक्षा में,
वे राक्षसों को स्वर्ग सिधारते हैं।
उनके संकट को दूर कर वे,
फिर आगे की राह बनाते हैं।
हरण हुआ जब सीता का,
लौकिकता का भी वरण किया।
पेड़, खग, लता से पूछ पता,
मधुर संबंधों का भी भरण किया।
असत्य को पराजित करने को
वे रावण को मार गिराते हैं।
धर्मनिष्ठ विभीषण को वे,
लंका की राजगद्दी दिलाते हैं।
अवधपुरी में आकर वे,
प्रजावत्सल राजा बनते हैं।
उनके राज में शोक नहीं,
सब निर्भय हो विचरते हैं ।
मर्यादा के रक्षक हैं वे,
मर्यादा का पाठ पढ़ाते हैं।
आदर्श पर चलने को वे,
सदा सच्ची राह बताते हैं।
ऐसे हैं प्रभु राम हमारे,
स्वामी हैं हम सबके प्यारे।
कोई नहीं उनके बिन सुखिया,
सब कुछ प्रेम उन्हीं पर वारें।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड-बंदरा, जिला-मुजफ्फरपुर

मधुमास का यह प्यार है

प्रकृति के अनंत गोद में,
छाई ऐसी बहार है।
मानों जीवंत हो निर्जीव भी,
ऐसा मधुमास का यह प्यार है।
अनन्तता के बोध में,
यह जीवंतता की शान है।
मधुमास है यह उल्लसित,
ऋतुराज की यह तान है।
प्रकृति भी नए वसन में,
शोभा है कैसी पा रही।
मिलन के हर बिंदु पर,
सौरभ सकल दिखा रही।
हर पात हैं नए नए,
हर डाल है सुहा रही।
ऋतुराज ही वसंत है,
सबके दिलों पर छा रही।
उत्कर्ष की यह ऋतु है,
नए सृजन का भी हाथ है।
कोयल तान भर रही,
प्रकृति का भी साथ है।
अनन्तता की सृष्टि है,
जीवंतता के बोध में।
अनगिनत सुर भी साध हैं,
वसंत के प्रबोध में।

स्वागत है मधुमास का,
जो नव प्राण सबमें भर रहे।
दिलों में जो दूरियाँ बनी,
उसे भी यह मिटा रहा।
सृजन की यह शान है,
मृदु मुस्कान बनकर छा रही।
यह सुरम्य ऋतुराज है,
जो सभी दिलों को भा रही।
अलौकिक दृश्य है खड़ा,
प्रवीणता ललक रही।
प्रकृति के अनंत गोद में,
नवीनता झलक रही।
भटके न मार्ग में कभी,
विवेक है यह कह रहा।
सृजन की यह तान है,
चमन में रंग भर रहा।
रंग है वसंत की,
अनंत गाथा गा रही।
स्वविवेक से बढ़ें चलें,
यहाँ हर दिशा लुभा रही।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड-बंदरा, जिला-मुजफ्फरपुर)

खाकर हो जाते हवा हवाई

पृथ्वी दिवस मनाइए,
साल में दो पेड़ लगाइए।।
पृथ्वी को रखिए सुरक्षित,
लगाइए उस पर सुंदर-सुंदर वृक्ष।।
उपजाइए पृथ्वी पर अन्न,
प्रसन्न रहेगा आपका मन।।
खेत में न दीजिए विषैले खाद,
न ही उपजाइए अत्यधिक अनाज।।
गोबर का दीजिए खेत में खाद,
बैठकर खाइए शुद्ध अनाज।।
पृथ्वी पर लगाइए हरे-भरे पेड़,
मत कीजिए इसमें देर।।
पृथ्वी की करें हम गोद भराई,
हम सब मिलकर बनें दाई-माई।।
रखिए पृथ्वी को सदा स्वच्छ,
तभी होंगे जीवन में आप दक्ष।।
पृथ्वी है तो हैं पेड़, फल, फूल, दवाई,
खाकर हो जाते हम हवा-हवाई।।

नीतू रानी

म. वि. सुरीगाँव, प्रखंड – बायसी, जिला – पूर्णियाँ, बिहार

वीर कुँवर सिंह

वीर कुँवर, तुम मगध भूमि के, भारती के लाल थे,
अंग्रेजों को मार भगाने, संहारक व काल थे।
अस्सी वर्ष की तरुणाई ने, शत्रु का प्रतिकार किया,
गुरिल्ला युद्ध में थे कुशल, शूल बन प्रहार किया।
आरा-भोज की वीर वसुधा, मातृभूमि कुँवर की,
ऋण चुकाने निकला सिंह, देर नहीं क्षण भर की।
वीर बाँकुरा युद्ध-समर में, भारती के भाल थे,
अंग्रेजों को मार भगाने, संहारक व काल थे।
अंग्रेजों ने छलनी कर दी, लगी हाथ में गोली,
वीर कुँवर की टोली ने, तब भारत की जय बोली।
माँ गंगा को भेंट चढ़ाई, अपनी वाम भुजा को,
हस्त ने गंगा को दान दिया, स्वयं थाम भुजा को।
सिंह के दृढ़-निश्चय फिर भी, अडिग व विकराल थे,
अंग्रेजों को मार भगाने, संहारक व काल थे।

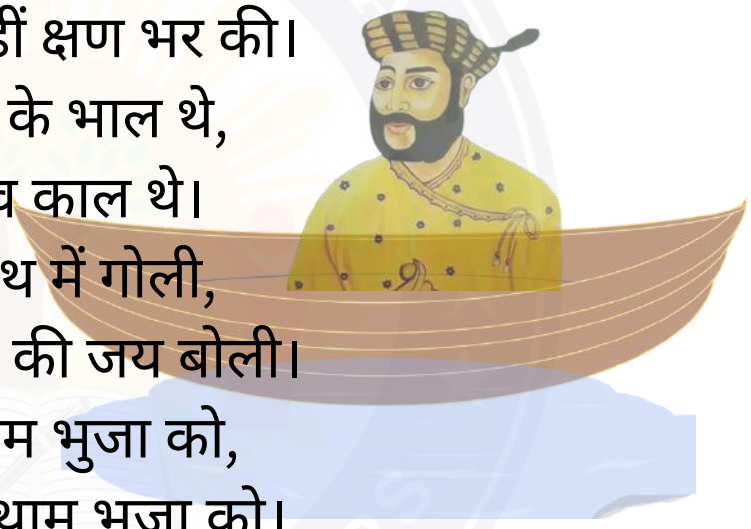

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय, माधोपुर, चंडी, नालंदा

संसार के असली मर्म

कोई भी कुछ कह ले सुन ले ,
इस दुनिया में कोई नहीं रह पाया है ।
जो इस मृत्यु भुवन आया वंदे ,
कभी चैन नहीं रह पाया है ।
अपनों से गिला शिकवा है सबको ,
पर तेरे लिए अपना मीत नहीं ।
यहाँ से जाने के अनजाने डगर में ,
तेरे साथ देने की कोई रीत नहीं ।
नियति में जो लिखा है प्यारे ,
वही तो एक दिन होता है ।
कितना काल प्रबल होता ,
यह अंत समय ही दिखता है ।
सपने रह जाते सपने ही ,
सब सूना सा हो जाता है ।
कोई नहीं इस जग में वंदे ,
सब मुँह अपना मोड़ जाता है ।
सगे संबंधी हैं जितने भी ,
वे कुछ भी न कर पाते हैं ।
काल बली है इस जग में ,
सब लोग यही तो समझाते हैं।
जिंदगी में बने रहने पर ,
सगे संबंधी भी साथ अड़े होते ।
संसार से विदा होते ही ,
वे भी सीधे भाग खड़े होते ।
अब मतलब नहीं किसी को तुमसे ,
अब सब हैं मतलब फेर लिए ।
नियति का केवल दोष देकर ,
अब साथ नहीं कभी तेरे लिए ।
जिंदगी में यह हरदम सीखो ,
न कभी गलत कर्म किया करना ।
अपनी संतान के खातिर भी ,
कभी अधर्म की राहें मत चलना ।
जिंदगी एक बार मिली है तुझको ,
सदुपयोग सदा इसका करना ।
कभी दुराग्रह कभी लालच में ,
दुरुपयोग नहीं इसका करना ।
कर्म प्रधान यह मानव तन ,
भटकाव में कभी न पग रखना ।
सच्चे दिल से कर्म करो औ
दया भाव भी साथ रखना ।
जिंदगी जब तक जियो यहाँ पर ,
सद्भाव जनित व्यवहार करना।
किसी बात के लिए कहीं तनिक भी ,
न क्रोध कभी प्रकट करना ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

आओं हम सिखलाएं

आओं दीप जलाएं, सबको राह दिखाएं।
सच करना सपनों को, आओं हम सिखलाएं।।
देखो अनपढ़ कोई, भूल से बच न जाए,
अक्षर की भाषा का, जीवन राग सुनाएं।
हों नन्हें-मुन्हें बच्चे, या घर की महिलाएं,
काम करें जो बच्चे, या युवती बालाएं।
शिक्षा की महिमा को, आओं हम बतलाएं,
घर-घर में समझाएं, ऐसी अलख जगाएं।।
आओं दीप जलाएं, सबको राह दिखाएं।
सच करना सपनों को, आओं हम सिखलाएं।।
अनपढ़ जीवन होता, गहे हुए बाधाएं,
उसको शिक्षा से ही, कंचन हम कर पाएं।
ग़म जो भी हों आते, लड़ना यही सिखाएं,
मुश्किल हों हालातें, उबरना भी बताएँ।
आगे बढ़ते जाना, राहें नई बनाएँ,
हार गई भी बाज़ी, जितना यही सिखाए।
इससे तिमिर घनेरी, पल में ही छँट जाए,
दुर्दिन के पल बीतें, सुखमय पल झट आएं।।
आओं दीप जलाएं, सबको राह दिखाएं।
सच करना सपनों को, आओं हम सिखलाएं।।
तरसती जो निगाहें, हासिल कर दिखलाएं,
शिक्षा-पुष्प खिलाएं, मन-उपवन बन जाए।
सारे भेद मिटाएं, समता भाव जगाएं,
भू पर चलना छोड़ो, फलक यही बैठाएं।
खुद भी शिक्षा पाएं, औरों को बतलाएं,
जड़ता भाव मिटाएं, बोध-व्यवहार कराएं।
सच कहता हूँ यारो, शिक्षा जो भी पाए,
सब पाठक के आगे, अपना शीश झुकाए।।
आओं दीप जलाएं, सबको राह दिखाएं।
सच करना सपनों को, आओं हम सिखलाएं।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय, भेड़हरिया इंग्लिश, पालीगंज, पटना

प्रियवर तब रामायण पढ़ना

प्रियवर तब रामायण पढ़ना
प्रियवर तुम रामायण पढ़ना
दु:ख मन को जब व्याकुल करे
और राह अंधकार चहुँओर दिखे
संबंधों के अनुबंधों में जब
आएँ धुंध काले बादल के
प्रियवर तब रामायण पढ़ना।
प्रियवर तुम रामायण पढ़ना।
पुत्र धर्म समझाने को
पति कर्तव्य निभाने को
भाई का प्रेम बतलाने को
तुम एक बार रामायण पढ़ना
प्रियवर तुम रामायण पढना।

सेवा भाव हनुमान से सीखना,
श्रेष्ठ त्याग लखन से,
राज विराग भरत से सीखना,
अनुराग प्रभु श्री राम
भक्ति भाव केवट-शबरी से,
अवसादों में जब घिरना।
प्रियवर तुम रामायण पढ़ना।।
आए जब-जब बात धर्म की
रावण के संग नहीं तुमको
राम संग होना होगा
कर्त्तव्य पथ पर विघ्न जब आए
रामत्व का मर्म समझना होगा
प्रियवर दु:ख व्याकुल करे जब
फिर एक बार रामायण पढ़ना
प्रियवर तुम रामायण पढ़ना।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया, बिहार

वीर कुँवर की हुंकार

मगध की भूमि पर,
कुँवर सेनानी वीर,
हुंकार शार्दूल सम, दुश्मनों के काल थे।
न थी उम्र की चिंता,
न थी शिकन की रेखा,
आभा लिए रवि-सम, चमकते भाल थे।
साहस था बेमिसाल,
लगी गोली, काटी बाँह,
संहारक दुश्मनों के, रूप विकराल थे।
हाथ में खड्ग लिए,
अश्व पर सवार हो,
प्रहार से शत्रु चीखें, योद्धाओं के लाल थे।

एस. के. पूनम
फुलवारीशरीफ, पटना

कुँवर सिंह

मृगराज सी हुँकार,
चमकती तलवार,
अंग्रेजों को ललकार, किए जो कमाल थे।
उम्र अस्सी किए पार,
यौवन सी स्फूर्ति धार,
रविसुत हो सवार, बने जो विकराल थे।
गोली गई बाँह पार,
शमशीर से कर वार,
गंगा को दे अभिसार, रच दी मिसाल थे।
गर्व हमें बेशुमार,
गा रहा गाथा संसार,
जन्मे कुँवर बिहार, शत्रुओं के काल थे।

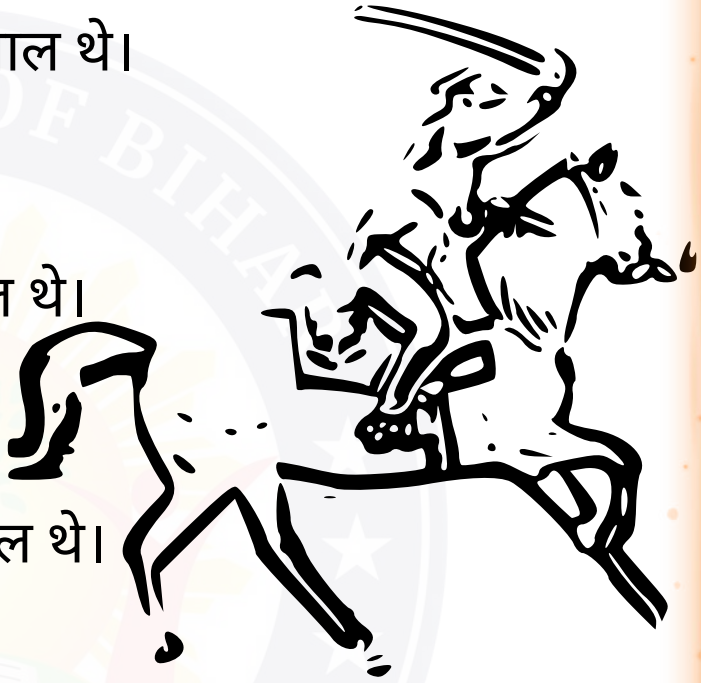

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया, इंगलिश पालीगंज, पटना

अब हमें भूगोल बदलना चाहिए

अब दुश्मन को मिलकर दलना चाहिए
लाहौर कराची नही पूरा पाक दहलना चाहिए।
गुस्ताखी कर दी, तुमने हमें छेड़ कर,
अब इतिहास नहीं भूगोल बदलना चाहिए।
खूब हुआ गणतंत्र दिवस का प्रदर्शन,
अबकी झांकी का प्रदर्शन सीमा पर दिखना चाहिए
बहुत हुए सिंधु जल समझौते,
अब दुश्मनों का भी रक्त निकलना चाहिए।
नापकियों का फिर नहीं ही कभी सवेरा,
नापाक ज़मी पर ऐसा सूरज ढलना चाहिए।
रक्त बहे सपूतों के, ताशकंद भी हमने भुला दिया,
विश्व पटल पर नक्शा पाक का बदलना चाहिए
ललकारा है नापकियों भरत वंश के लालों को,
धरा ए पाक पर रुदन विलाप मचना चाहिए
इतिहास नहीं भूगोल बदलना चाहिए.....

निधि चौधरी,
किशनगंज
बिहार

पुस्तकें

जीवन की आधार पुस्तकें, ज्ञान की भंडार पुस्तकें,
“तमसो मा ज्योतिर्गमय” की, भरती है संस्कार पुस्तकें ।
जग को राह दिखानेवाली, ध्येय पथ ले जानेवाली,
दु:ख-संकट में पड़े मनुज की, सत्साहस बढ़ाने वाली,
अच्छी व सच्ची मित्र कहाती, झूठ-सच का भेद बताती,
अज्ञानी को ज्ञान है देती, भटकों को सुपथ दिखलाती,
जब कुंद पड़ी मानव बुद्धि तो, करती हैं प्रहार पुस्तकें,
“तमसो मा ज्योर्तिगमय” की, भरती है संस्कार पुस्तकें।
दर्शन, वेद, पुराण की वाणी, संस्कृति की अमिट निशानी,
महाकाव्य व गीता जग में, परमसत्ता की अमृतवाणी,
ज्योतिषग्रंथ, हस्तरेखाएँ, त्रिकाल का रहस्य बताएँ,
विभिन्न शोध हैं जग में होते, नूतनज्ञान समृद्ध बनाएँ,
संगीत, कला की सृजनकर्त्ता, वाङ्मय अपार पुस्तकें,
“तमसो मा ज्योतिर्गमय” की, भरती है संस्कार पुस्तकें।
भाषाएँ, आधार व्याकरण, हर भाषा का मर्म कहाती,
ध्वनि, लिपि, रस, अलंकार से, साहित्य का सुमन खिलाती,
हों लेखक, विज्ञ, विज्ञानी-ज्ञानी, विद्या के सच्चे अधिकारी,
विधि-विधान व सद्ग्रंथों के, सच्चे अर्थों में उपकारी,
वृहद्-ज्ञान विस्तृत रूपों में, विद्या की है सार पुस्तकें,
“तमसो मा ज्योतिर्गमय” की, भरती है संस्कार पुस्तकें।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक
विद्यालय माधोपुर
चंडी , नालंदा

सुन री दीया

सुन री दीया
काश! तू सुन पाती,
मेरी विरह-व्यथा समझ पाती।
तेरी जलती लौ से,
क्या-क्या अनुमान लगाऊं?
मद्धिम पड़ती लौ से,
क्या-क्या कयास लगाऊं?
बिन पिया, दीया, तुझे क्या-क्या बताऊँ?
बिन पिया, दीया, तुझे क्या-क्या सुनाऊँ?
वन का पथ श्रीराम को मिला,
संग चला सीता का साया,
उर्मि को लखन का दृढ़ विश्वास मिला,
पर मैं...?
पिया पास होकर भी न पास दीया!
पिया पास होकर भी न पास दीया!
उर्मि जस विश्वास न मिला,
सीता जस साथ न मिला।
मेरा कैसा प्रारब्ध दीया?
मेरा कैसा प्रारब्ध दीया?
पर री दीया!
मेरा क्या दोष, दीया?
ना सुसंगिनी, ना अर्धांगिनी,
ना सहचरी, ना स्नेह की छाँव,
बस मौन, प्रतीक्षा, संताप और बेजान शरीर लिए
अयोध्या की बेजान महलो को निहारती ठाँव
और तपस्वी पति भरत का चौदह वर्ष का वह
संकल्पित नंदीगाँव
चौदह वर्ष का वह संकल्पित नंदी गाँव।
हाय! ये विधि का विधान,
हे ब्रह्मा! कैसा मेरा भाग्य दिया।
कैसा मेरा प्रारब्ध दीया!
कैसा मेरा प्रारब्ध दीया!

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा (शोध व अध्यापन उपसंवर्ग)
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षक महाविद्यालय
विष्णुपुर,बेगूसराय

बड़ा कठिन है रे मन

(श्रुतिकीर्ति की अंतरवेदना)

बड़ा कठिन है रे मन!
राजरानी बनकर अवध में रहना,
और राजर्षि पति शत्रुघ्न का
भ्रातृधर्म निभाने को संकल्प लेना
और... बिन कहे
प्रिय से दूरी का व्रत ले लेना
हाय! ये काँटों-से चुभते, कसकते पल!
बड़ा कठिन है रे मन!
स्वयं को चौदह वसंतों तक रोक कर रखना
सीता, मांडवी, उर्मिला दी की अपनी-अपनी
विवशताएँ —
किन्तु हाय!
इस श्रुति की बेचैनी, तन्हाई, अंतर्वेदना के स्पंदन
का किसी को समझ न आना
बड़ा कठिन है रे मन!
खुद को चौदह वसंतों तक निरंतर समझते रहना....
पति को राजधर्म निभाते रोज देखना,
और नन्हें राजकुमार को राजर्षी बन संयम से जीते
देखना
और अंतस की धमस में स्थित
संवेदना का मौन विलाप सुनते रहना
बड़ा कठिन है रे मन!
ख़ुद को चौदह वसंतों तक अपलक प्रतीक्षा में बनाये
रखना
तन्हाई में अपनत्व की चाह रखना,
और मोम-सी पिघलती संवेदना को
हर पल थामना,
झूठी मुस्कान ओढ़े
अवध को निर्निमेष निहारना
बड़ा कठिन है रे मन!
चौदह वसंतों तक स्वयं को समझाना...
ख़ुद ही ख़ुद से निरंतर जूझते-जूझते
थककर चूर हो जाना,
हर पल छलकते नयन को सबसे चुराना,
और चेहरे पर मुस्कान ओढ़े अडिग रहना —
बड़ा कठिन है रे मन!
स्वयं को चौदह वसंतों तक समझाना...
बिगड़े हालातों में खुद को भी सँभालना,
और अवध की समस्त राजमाताओं के
ढहते विश्वास को
राम आगमन तक थामे रखना —
बड़ा कठिन है रे मन!
चौदह वसंतों तक सबको बचाना...
अपने ही द्वंद्व से जूझते हुए,
चौदह वसंतों तक
यूँ ही जीते रहना
यूँ ही जीते जाना
बड़ा कठिन है रे मन!
चौदह वसंतों तक
बेजान होने से अवध को बचाते रहना
हर दिन उस एक दिन के लिए जीना,
जब राम-सीता-लखन कुशल लौटें,
अवध फिर से पूर्ण हों
इस आशा का दीप जलाए रखना
बड़ा कठिन है रे मन!
इस विपदा मे अवध को संभाले रखना
अवध को संभाले रखना
अवध को संभाले रखना

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा (शोध व अध्यापन उपसंवर्ग)
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षक महाविद्यालय
विष्णुपुर,बेगूसराय

माँ

भू-तल पर जन-जीवन की तुम आशा हो।
माँ तुम चराचर जगत की परिभाषा हो।
तुम हीं लक्ष्मी, सरस्वती, तुमसे जीवन है,
माँ तू जण-गण की सब कलिमल नाशिनी हो।
तू हीं संहारिनी, तुझसे तुंग निर्माण,
सफलता शीर्ष चूमे, कर ऐसा कल्याण।
तेरे चरणों में श्रद्धा के पुष्प चढ़ाऊँ,
तपश्चर्या मार्ग में न हो कोई व्यवधान।
माँ तू प्रचंडता में निर्मल-सी छाया है।
नियति ने जो लिखा वही उत्कृष्ट माया है।
तू निर्माण-विध्वंशक, तू हीं है जगजननी,
अंतस में तेरे संपूर्ण ब्रह्मांड समाया है।
माँ तू धरती पर हरियाली लाती हो।
रत्नगर्भा के शस्य पुष्पों को लहराती हो।
दामिनी घनपय तू, विपदा -संपदा में,
माँ तू श्रृष्टि का सम्यक-सार बन जाती हो।
अद्भुत तेरा रूप जय माँ विंध्यवासिनी।
अद्भुत तेरी शक्ति, अपार ज्ञान प्रदायिनी।
भक्तों के सब पाप हरो कष्टों से दो मुक्ति,
त्रिभुवन सुखदात्री तू सौभाग्य दायिनी।
दस भुजाओं वाली, तेरी ज्योति न्यारी।
सोलह श्रृंगार रचाती, दस शस्त्र धारी।
रौद्र, दीप्तिमान कभी प्रखर ममतामयी,
आदिशक्ति तू, महिमा अपरम्पार तुम्हारी।
दुष्टों का कर संहार, भव करे रखवाली।
दर पर शीश नवाऊँ, माँ शेरावाली।
अनुपम तेरी छवि, उग्र कभी कल्याण करें,
तू माँ अविनाशी मंगल करने वाली।
भक्ति-भाव से जो शरण में तेरी आया।
कर आरती, दर पर नैवेद्य चढ़ाया।
माँ आस्था समर्पण के भक्ति योग क्रिया से,
प्राकट्य सत्य है, भक्त ने अभिमत फल पाया।

अश्मजा प्रियदर्शिनी
पटना , बिहार

दोहा विधान

आओं हम सीखा रहे, दोहा लिखना खास।
सरल तरीका है यही, करना है अभ्यास।।०१।।
जान रहा हूँ मैं यहाँ, ज्ञान हमारा अल्प।
फिर भी हूँ बतला रहा, दोहा का संकल्प।।०२।।
चार चरण में लिख रहे, हम सब दोहा जान।
तेरह मात्रा से लिखें, विषम चरण श्रीमान।।०३।।
ग्यारह मात्रा का चरण, रखिए सम पद मान।
लय का रखना ध्यान है, रचिए नित्य सुजान।।०४।।
विषम चरण के अंत में, हो लघु गुरु का कार्य।
सम चरणों को कीजिए, अब गुरु लघु अनिवार्य।।०५।।
सम चरणों में हम रखें, तुकांत का भी ध्यान।
आधी मात्रा पूर्व का, मात्रा गुरु लो मान।।०६।।
पहले आए अर्ध तो, करिए गिनती छोड़।
इतने से होता नहीं, दोहा का यह जोड़।।०७।।
छंदों में दोहा सदा, लगे कठिन है भ्रात।
करें नित्य अभ्यास को, इसे सिखाते मात।।०८।।
कल संयोजन का नियम, रखना होगा ध्यान।
इसके सूत्र अनेक हैं, जान रहे विद्वान।।०९।।
पाठक दोहा लिख रहा, करने को अभ्यास।
समझ सकें हम मर्म को, मेरा यही प्रयास।।१०।।

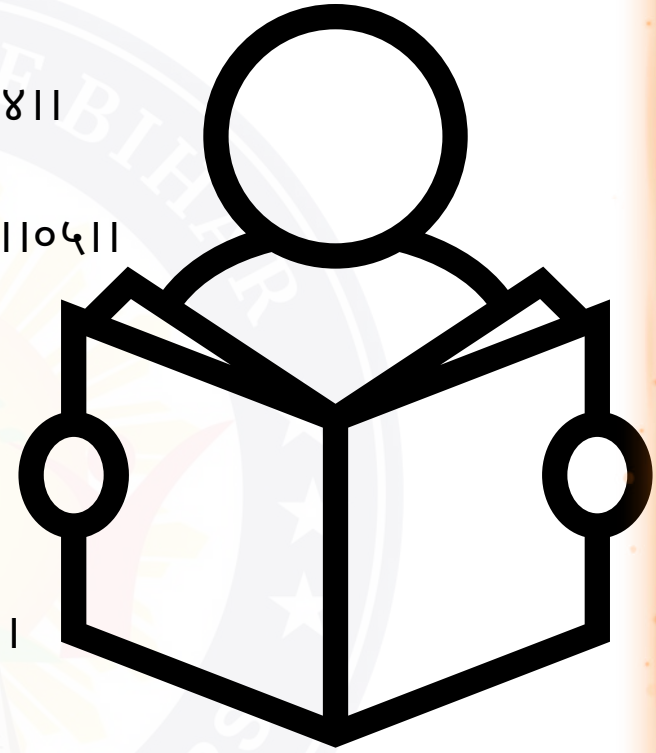

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना

पुस्तकें

पुस्तक ज्योति समान है, तम को करती दूर।
शब्द-शब्द में ज्ञान है, रस को लें भरपूर।।
गुरुवाणी का गूंजना, देता सटीक विचार।
वेद, शास्त्र, उपदेश में, छिपा हुआ आचार।।
मीरा की संजीवनी, तुलसी रस के छंद।
कबिरा के दोहे बने, वाणी जैसे चंद।।
कभी विवेकानंद-सी, वाणी में हो आग।
कभी कलाम विचार में, विज्ञानों का राग।।
जिसने पुस्तक थाम ली, बचपन से अनुराग।
उसके जीवन-पंथ में, सदा खिला सु-बाग।।
पुस्तक का अनुमान क्या, वह है ज्ञान का मूल।
जिसने उसको जोत ली, पाया जीवन फूल।।
पढ़ने की जो वृत्तियाँ, करतीं हैं उत्थान।
शब्द-भंडारों से मिले, सम्मानित स्थान।।
डिजिटल के मोह में, मत खो बैठें ध्यान।
पुस्तक से फिर जोड़ लो, जीवन का विधान।।
विश्व दिवस यह कह रहा, पुस्तक से रख मेल।
ज्ञान-विवेक-विचार का, हो जीवन में खेल।

सुरेश कुमार गौरव
'प्रधानाध्यापक'
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना
(बिहार)

प्रार्थना

खुशियाँ न देना तू इतनी प्रभु
कि दुखियों के गम पर हँसने लगूँ
ऊँचाई न देना तू इतना प्रभु
कि धरती मुझे नीची लगने लगे
शक्ति भी इतना न देना प्रभु
कि दुर्बल को मैं सताने लगूँ
भाव ऐसा न मुझको देना प्रभु
कि दूसरों की खुशियों से जलने लगूँ
तू ज्ञान ऐसा न देना प्रभु
कि अभिमान मन में आने लगे
पनपे न मन में लालच मेरे
कि लोगों को मैं भी ठगने लगूँ
देना तू मुझको भक्ति प्रभु
कि दीनों की सेवा मैं करने लगूँ
माँगू मैं तुमसे बस इतना प्रभु
स्मरण तुम्हारी हमेशा रहे और
भक्ति में मन को समर्पित करुँ ।
भक्ति में मन को समर्पित करुँ ।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया

महावीर का पावन प्रकाश

चमका जैन धरा पर तारा, वीर स्वराज पुकार,
अहिंसा का मंत्र सुनाया, बना जगत आधार।
त्याग, तपस्या, संयम-शक्ति, जिनका रहा प्रबोध,
महावीर ने खोल दिए, आत्मा के सब बोध।
राजमहल छोड़ा उन्होंने, पथ को चुन लिया,
सिद्धि-शिखर पर चढ़ने को, सब कुछ तज दिया।
दिगंबर व्रत, मौन तपस्वी, भावों की परवाज,
जीव-दया, समता-संदेश, उनका यही समाज।
“अहिंसा परमो धर्म:” था, उनका अमर कथन,
सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, थे जीवन के व्रतन।
निज-आत्मा की खोज में, जग को राह दिखाई,
जैन धर्म की लौ बनी, जिसने तम हर पाई।
चेतना के दीप जलाए, करके शुद्ध विचार,
अंत:करण को निर्मल करके, पाया मोक्ष द्वार।
उनकी वाणी अमृत बनी, जीवन का संबल,
जिसने सुनी वही बना, निज अंतर में प्रबल।
चलो आज उनके पथ पर हम भी बढ़ें आगे,
करें सत्य, संयम का वंदन, बनें पथिक जागे।
महावीर के चरणों में श्रद्धा-पूर्ण प्रणाम,
जग में फैले शांति-सुधा, हो सारा कल्याण।

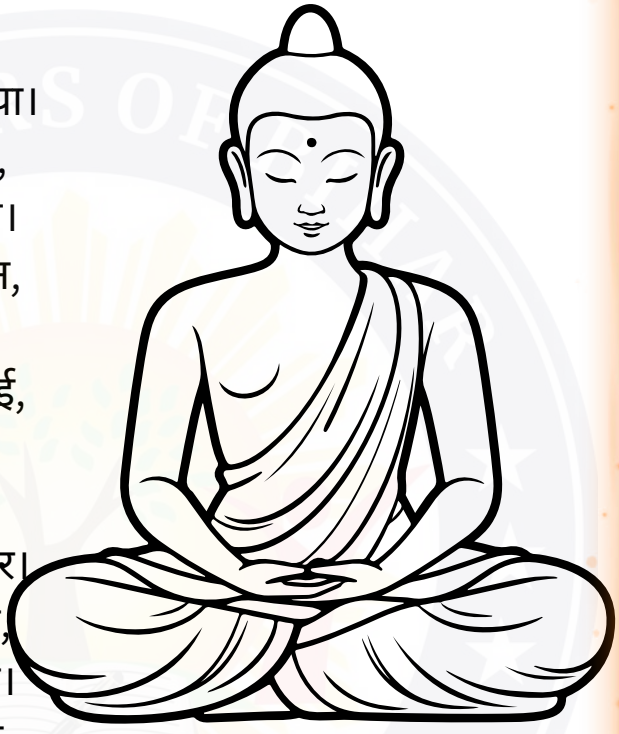

सुरेश कुमार गौरव
‘प्रधानाध्यापक’
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

विश्वास और अभ्यास का छंद सोरठा

छंदों का अभ्यास, रोज कौन सीखा रहा।
पूरा है विश्वास, लगन सिखाती है सही।।
मात शारदे आस, जो ठुकरा सकती नहीं।
मैं हूँ उनका दास, अब सीखा सकती वही।।
होगी सफल प्रयास, आएगी करने कृपा।
बन जाऊं मैं खास, बिठा देगी फलक वही।।
माता हो जब साथ, किसको दुनिया की पड़ी।
चरण गहूँ मैं नाथ, अर्चन आएगी नहीं।।
सुनो मित्र हर बात, फँसो नहीं मझधार में।
गुजरेगी यह रात, मिले सुबह उजास यहीं।।
रहते कैसे लोग, जगत के भीड़-भाड़ में।
मिलता उनको भोग, माँ बरसाएगी कृपा।।
साध सका जो मौन, वो कैसा ज्ञानी भला।
कौन करेगा गौन, करुणा लूटाती वही।।
क्यों हम रहें निहार, मूर्ख दिखाएं राह जो।
मात कृपा उपहार, है मार्ग खोलती वही।।
खुद पर रखना ध्यान, मन होता है बावरा।
विनती इतनी मान, कटे सफर हरपल सही।।
बढ़ जाती जब चाह, चाटुकार बनते नहीं।
श्रद्धा जहाँ अथाह, माँ दर्शन देती वहीं।।
बची रहे ईमान, नेक दिल हम बने रहे।
गूढ़ छंद का ज्ञान, माता सिखलाती सही।।
सबकी प्यारी जान, अपनों से डरिए नहीं।
क्यों होते हलकान, माँ वाणी कहती यही।
नहीं हुई है रात, जगी चेतना है जहाँ।
कल की सारी बात, रहे अधूरी भी कहीं।।
हो जैसी आवाज, वाह-वाही मिले कहीं।
करते सब हैं नाज, जब सज जाती लय सही।
नहीं कसे हम तंज, नहीं पूछते हाल हैं।
हो जातें कुछ रंज, आएगी विचार नहीं।।
रचकर सोलह भाग, वंदन वाणी को किया।
किस्मत जाए जाग, धर हाथ भारती कही।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

मन अपना वासंती कर लें

सुभग संस्कार से रग रग भर दें ।
मन अपना वासंती कर लें ।
सुभग पवन के सरस हैं झोंके ,
कोई नहीं जो इनको रोके ।
विशद बड़ाई वसंत पवन की ,
कोई नहीं जो इनको टोके।
मह मह करती प्रकृति सुहानी ,
हर दिल में छाई दीवानी ।
नव पल्लव कहती निज बानी ,
सुंदर दृश्य मनोहर जानी ।
यह प्रकृति की अनुपम है माया ,
देवों का भी दिल ललचाया ।
नव पल्लव पेड़ों पर आया ,
चहूँ दिस मधुमास है छाया ।
सब दिल को आनंदित कर दें ,
मन अपना वासंती कर लें ।
मधुमास वसंत हृदय मन भाया ।
जीवन सुखद सुहृद मन लाया ।
कंचन सदृश मंजर है छाया ,
यह सब है ईश्वर की माया ।
मधुमास ही जीवन संगीत है ,
इसके सभी जीवंत मीत हैं ।
सबके दिल रहती फ़गुनाई ।
जैसे जीवन में लगती तरुनाई ।
दिल की धड़कन दिल ही जाने ,
इसके भी सुंदर पैमाने ।
फागुन मास में दिल को भर दें ,
मन अपना वासंती कर लें ।
बच्चे बूढों पर मधुमास है छाया ,
यह मधुमास सुभग मन लाया । ,
सरस प्रेम की बहे बयार ,
सब होते इसके लिए तैयार ।
कोयल कूक रही डाली पर ,
सबके मन हर्षाती हरियाली पर ।
भँवरे करते रहते गुँजार ,
नव पल्लवों पर छाई बहार ।
सरस मास की सरस सब बातें ,
हर दिल धड़क रहा दिन रातें ।
सरस मास का सरस पवन है ,
यही मधुमास में सुंदर मिलन है ।
जन जन में प्रीति रस भर दें ,
मन अपना वासंती कर लें ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

अहिंसा के पुजारी महावीर

जैन धर्म के महापर्व के
सुखद अवसर को हम जानें ।
२४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर को ,
हम सभी भक्ति भाव से मानें ।
कुंडलपुर में भगवान महावीर का
ईसा पूर्व अवतरण हुआ ।
सत्य , अहिंसा के इस धीर व्रती का
जग में पावन पहचान हुआ ।
भगवान महावीर अहिंसा के पुजारी ,
जिनके उपदेश बड़े सुखकारक हैं।
प्रेम , सद्भाव , शांति वचन उनके ,
ये सभी जीव मात्र हितकारक हैं ।
जियो और जीने दो के नारे ,
उनके बड़े लोकप्रिय हुए ।
सब प्राणों को समान समझने से ,
सबके वे बहुत प्रिय हुए ।
मंगलमय उपदेश महावीर के
मानव के लिए बड़े प्रेरक हैं ।
हो वर्जित जीव हिंसा सर्वत्र ,
यह संसार के लिए बड़े सत्प्रेरक हैं ।
शांति , सद्भाव की गूँज सदा औ
मानव अहिंसा का पुजारी हो ।
व्यर्थ किसी का न कोई प्राण हरे ,
न कभी हिंसा करना लाचारी हो ।
शांति , अहिंसा , सत्य पथ पर चलने को ,
भगवान महावीर के उपदेश सदा बताते हैं ।
यही मंगल संदेश दुनिया भर में ,
प्राणियों पर दया करने की राह समझाते हैं ।
उनके विचार सभी सभ्य सार्थक ,
ये मंगल उपदेश प्रबोधक भी ।
प्रेम , सद्भाव औ शांति तितिक्षा ,
ये सभी जीवन के संवर्धक भी ।
प्रण करें हम आज ही शुभ दिन ,
उनके उपदेश का सदा मनन करें ।
उनके विचारों को नित ध्यान में रखें ,
न तनिक उनके वचनों का हनन करें ।

अमरनाथ त्रिवेदी

पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

जीवन-यात्रा

करना है, करते ही जाना है,
बढ़ना है, बढ़ते ही जाना है,
जब है सूर्य का तुममें वास,
कोई अंधेरा क्या बिगाड़ेगा,
उर में हो जोश का आकाश,
शत्रु भी तेरा क्या कर पाएगा ?
राहों में जब ठोकर लगते,
वे बहुत कुछ सिखलाते हैं,
परिस्थितियों के साये में,
मंजिल भी बदल जाते हैं,
पर जीवन का यह गुण है,
वह कभी नहीं रुकता है,
हर मोड़ पर राहें फूटती हैं,
कुछ नया मिलता जाता है,
वृक्ष कभी छाया देती,
मार्तण्ड देते हैं प्रकाश,
धरती का बिस्तर होता,
आशियाना है आकाश,
मयंक की शीतलता हो,
बादलों का हो प्रेम-वृष्टि,
आनन्द मिलता जाता है,
प्रभु की है कैसी ये सृष्टि,
प्रकृति की हम सेवा करें,
समझें उन्हें माता समान,
वृक्ष लगाकर करें हम सब,
उनका अलग ही सम्मान,
निज कर्मों से सींच धरा को,
हमें बहुत कुछ ही दे जाना है,
निज संघर्ष के द्वारा पल-पल,
एक नवीन आदर्श दिखाना है।

गिरीन्द्र मोहन झा

+२ भागीरथ उच्च विद्यालय,
चैनपुर- पड़री, सहरसा

मोबाईल की लत

मोबाईल की लत,
लोग रहते मोबाईल में व्यस्त।
मोबाईल की लत,
बड़ा जबरदस्त।
जबसे लिया मोबाईल,
लाया नया स्माइल।
मोबाईल आया हाथ,
छूट गया सबका साथ।
मोबाईल का हुआ अवतार,
खुला नया आविष्कार।
अगर चाहिए आपको जानकारी कुछ,
झटपट मोबाईल लीजिए पूछ।
मोबाईल देखकर कोई अच्छा बना,
मोबाईल देखकर कोई बुरा बना।
आजकल मोबाईल हो गया भगवान,
मोबाईल से जो माँगो वो मिलता वरदान।
आजकल माता -पिता रहते मोबाईल में व्यस्त,
बच्चे भी मोबाईल के लिए माता- पिता को करते पस्त।
सरकारी नौकरी हो प्राईवेट,
सबमें लगता मोबाईल का नेट।
मोबाईल पर हीं होता है अब सारा काम,
धीरे- धीरे बढ़ रहा मोबाईल का दाम।
मोबाईल किया कितनों घर बर्बाद,
घर छोड़ भागा लड़की- लड़का घूम रहा आजाद।
जो देखा मोबाईल गया उसका आँख ,कान,
मोबाईल से गया कितने आदमियों की जान।
मोबाईल से लोग हो रहे बीमार,
मोबाईल पर क्या शानदार फोटो आता है यार।
मोबाईल अगर खो जाए लगता गई मेरी जान,
आजकल की दुनिया में मोबाईल बन गया भगवान।
मोबाईल का लत न लगाना मेरा भाय,
मोबाईल से बिगड़ी कितनी शादीशुदा दाय, माय।
मोबाईल का लत है बड़ा खराब ,
कम उम्र में लग गया आँखों पर चश्मा का दबाव।

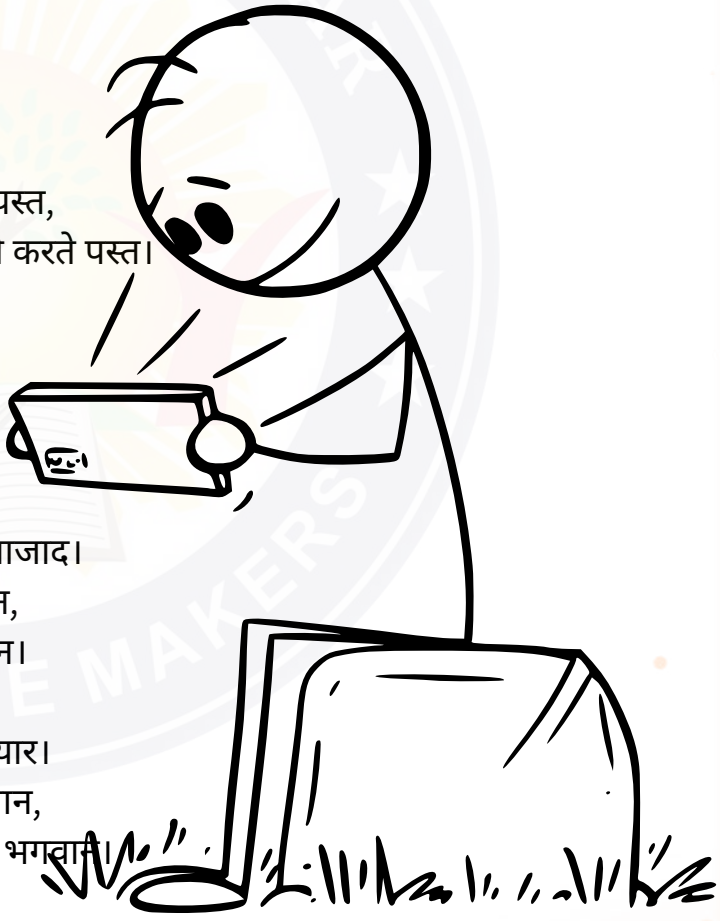

नीतू रानी
मस्कूल -म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ बिहार।

आम/ आदमी/ अंदाज

आज आदमी आम हो गया, नहीं रहा कुछ खास।
बदल रहे अंदाज सभी के, रहा नहीं विश्वास।।
दोष रहा भर सबके मन में, व्यसन बनाया दास।
समझ रहा औरों को छोटा, है करता उपहास।।
धन संचय में लगा हुआ है, करता है परिहास।
अपनी सुख की चिंता करता, नहीं किसी को रास।।
दोष गिनाएं बड़े-बड़ों का, कहता उनको खास।
सुख से उनके हीं रहता है, हरपल पड़ा उदास।।
दंश झेलता हरपल रहता, सदा सताती प्यास।
सीख अभाव संग में जीना, भला लगे उपवास।।
जिसके घर पकवान छने है, होता है वो खास।
आम आदमी को होता है, रूखी सूखी रास।।
महलों में रहने का सपना, रहता किसके पास।
जो सिर ढकने को मिल जाए, वही आम आवास।।
आम आदमी की व्यथा कहे, पाठक हैं बिंदास।
कर्म सोंच से मिल जाए तो, जीवन रहे उजास।।

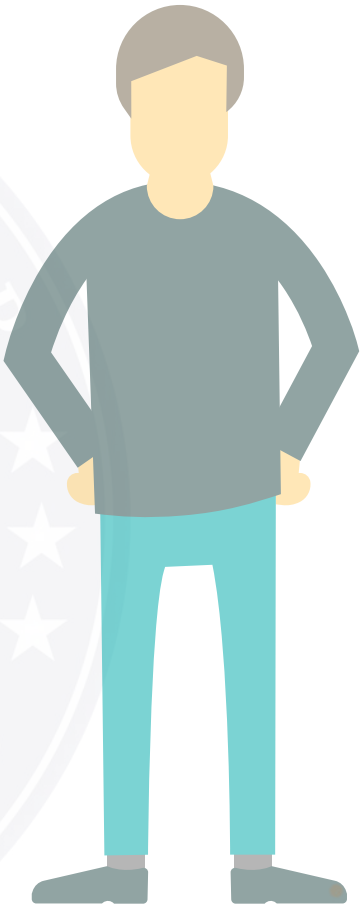

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

मर्यादा की रास में

मर्यादा की रास में, पंचवटी में राम।
शूर्पणखा आकर वहाँ, देख रही अविराम।।१।।

सूरत मोहित कर गया, जगी काम की आग।
सुंदर छवि लेकर गयी, करने वह अनुराग।।२।।

अनुनय करती प्रेम का, बोली राम समीप।
पूरण कर मम कामना, बनिए हृदय महीप।।३।।

हिमवत शीतल राम है, जगती कैसे आग।
पत्नी व्रत श्रीराम का, सीता में हीं राग।।४।।

मर्यादा को लांघकर, करना था यह काम।
असमंजस में पड़ गए, सीता पति श्रीराम।।५।।

कहा विवश मैं सुंदरी, भेज अनुज की ओर।
हर्षित होकर वह चली, लिए प्रेम की डोर।।६।।

अनुचर हूँ मैं राम का, करो नहीं मनुहार।
लो अनुमति मम तात का, लखन किए इंकार।।७।।

काम वासना देखकर, राम धरे मुस्कान।
मर्यादा को लांघकर, होता है नुकसान।।८।।

हठ की जब वह लखन से, काट लिया था नाक।
कामातुर क्रोधित हुई, कटु मय बोली वाक।।९।।

जाकर सीधे ज्येष्ठ से, मिथ्या करी प्रलाप।
रावण का भय है नहीं, समझ सकें जो आप।।१०।।

मर्यादा की रास में, भ्राता लो संज्ञान।
लाज हमारी तुम रखो, हरकर उनका मान।।११।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना।
संपर्क – 9835232978

यह नव वसंत कुछ बोल रहा

जीवन में अमृत घोल रहा ,
यह नव वसंत कुछ बोल रहा ।
कौशल है इसकी छटाओं में ,
हर वृक्ष है इसकी भुजाओं में ।
हर रूप है इसकी अदाओं में ।
हर रंग है इसकी लताओं में ।
कोयल कूके हर डाली पर ,
नाचे मयूर हर ताली पर ।
इस विशद वसंत को पाता हूँ ,
इसे हृदय अनंत तक लाता हूँ।
जीवन की खुशियाँ निराली है ,
इसका रूप रंग मतवाली है ।
इस सृष्टि का तरुण नियामक है ,
यह वेला अति फलदायक है ।
मौसम की है यह शुभ्र प्रभा ,
है लगती मानो पुष्प सभा ।
यह उर के अनंत को भाता है ,
यह जीवन का राग सुनाता है ।
यह मौसम है अति सौम्य सुघर ,
यह ऋतु सुंदर अति सृष्टि प्रवर ।
इच्छाएं तब कहाँ सो पाती है ,
तन मन में भी ज्योति जलाती है ।
अनुरक्त फिजा जब छाती है ,
यह स्वयं प्रभा पुंज हो जाती है ।
कण कण में नव प्राण संचरित होता है ,
ऋतुराज वसंत जब अवतरित होता है ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

शुभ्रक की अमर गाथा

आओ सुनाऊँ तुम्हें,
एक बेज़ुबान, स्वामीभक्त शुभ्रक की अमर कहानी...
जब ऐबक ने राजपुताना लूटा,
मेवाड़ का वैभव मिट्टी में रौंदा,
राजा रावल सामंत सिंह का रक्त बहाया,
राजकुमार करण सिंह को बंदी बनाया।
लूटी संपदा, लूटा वैभव, छीना सम्मान,
सिंह-शुभ्रक संग ऐबक पहुँचा लाहौर दरबार।
पर सिंह सिंह-सा जो ठहरा,
अपनी गर्जना से दरबार हिला डाला,
क्रुद्ध ऐबक ने फरमान सुनाया—
“इसका शीश बनेगा क्रीडा गेंद
पोलो खेलकर लेंगे आनंद!”
शुभ्रक पर चढ़कर ऐबक,
शीश सिंह का छीनने आया
पर जैसे हीं घोड़े ने स्वामी को देखा,
स्वामी ने घोड़े को देखा
दोनों ने, आँखों हीं आँखों मे शत्रु को देखा
तुरंत हीं.....
थर्राई धरती,गरजे बादल,बिजली चमकी, नभ डोला।
शुभ्रक उछला, बिजली-सा कौंधा,
ऐबक को मर्मांतक झटका
ऐबक को प्रणान्तक पटका।
न तीर, न वार, न तलवार,न कटार
बस स्वामीभक्ति का अचूक प्रहार
बस स्वामीभक्ति का अचूक प्रहार।
क्षण क्या! पल क्या!
छटाँक भर में ऐबक धरा पर गिरा,
और काल के गाल मे न जाने कब समा गया।
शीश छीनने वाले का दु:दिन आ गया
शीश छीनने वाले का दु:दिन आ गया।
भौंचक्के दरबारी-गण
मौका देख शुभ्रक नयन,
स्वामी को पीठ पर बैठाए,
बन आँधी,बन बवंडर, बन सिकंदर
उड़ चला शुभ्रक स्वामी संग मेवाड़-रण
उड़ चला शुभ्रक स्वामी संग मेवाड़-रण
तीन दिवस, बिना थमे,
पहुंचा वह राजे के द्वार,
स्वामी संग—अडिग,अटल,
थका तन, किन्तु थका न मन।
राजकुमार शुभ्रक से उतरे,
लिए अश्रु भरे लोचन,
शुभ्रक नि:छल, स्थिर खड़ा।
स्नेह से सिंह ने शुभ्रक का माथा चूमा,
आँखों में उमड़ा आभार,
लेकर अपना पुत्रवत प्यार
किन्तु.....
देकर अपनी स्वामीभक्ति का एहसास
शुभ्रक ने ली अंतिम श्वास।
घोड़े का बलिदान अमर हुआ,
शुभ्रक-सा स्वामीभक्त फिर न कोई हुआ।
आज भी शुभ्रक के टापों की गूंज,
वीरता का राग-गीत सुनाती है,
स्वामीभक्ति का मंत्र दुहराती है
स्वामीभक्ति का मंत्र सुनाती है।

अवनीश कुमार

बिहार शिक्षा सेवा (शोध व अध्यापन उपसंवर्ग)
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर बेगूसराय

मोबाइल का जाल

मोबाइल आया संग में मिली सुविधा,
बढ़ती गई इस विचित्रता की दुविधा।
ज्ञान-विज्ञान का खोल के पिटारा,
छीन लिया हमसे अपनों का सहारा।
सुबह उठें तो स्क्रीन की तलाश,
रात सोएं तो आँखों में प्रकाश।
बातें अब दिल से कम होती हैं,
चैट विंडो में साँसें मानों खोती हैं।
न रिश्तों की गर्मी, न खुले संवाद शेष,
हर चेहरा अब बस स्क्रीन में विशेष।
माँ बुलाए, बच्चा देखे गेम, याद नहीं काम
पिता करें पुकार, पर न हो पढाई तमाम!
खेल-कूद की दुनिया रही पीछे,
संसार सिमट गया अंगूठे के नीचे।
आँखें थकीं, मन पूरा उदास हुआ,
पर मोबाइल का ही सब दास हुआ।
आओ जागें, सजग बनें फिर से,
जीवन को जोड़ें सजीव रिश्ते से।
मोबाइल रखें बस एक उपकरण,
ना बने वह जीवन का नियंत्रण।
थोड़ा समय अपनों को भी दें ,
हर क्षण को कर्म सजीव करें।
इस मोबाइल से मोह घटाएँ हम,
जीवन को जीवन अर्थ बनाएं हम।

सुरेश कुमार गौरव
प्राचार्य, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

पिता

सबका बोझ उठाना, करना नहीं बहाना।
अपना दर्द छुपाना, हर पल ही मुस्काना।।
सबका शौक पुराना, उफ्फ नहीं कर पाना।
संघर्ष की कहानी, नहीं सुनाना जाना।।
हाथ रहे जो खाली, लेकिन नहीं बताना।
कष्टों को खुद झेले, वादा सभी निभाना।।
खुद रातों को जागे, परिजनों को सुलाना।
रहकर भूखा-प्यासा, सबकी भूख मिटाना।।
जूते फट जो जाते, नया नहीं फिर लाना।
अपने लिए सदा ही, बहाने भी बनाना।।
कह दे बच्चा कोई, कर्जा लेकर आना।
अग्रिम वेतन पाया, सबको कह इठलाना।।
मौसम त्यौहारों का, रहता आना जाना।
कपड़े जो फट जाएँ, कुछ दिन काम चलाना।।
अवसर जब भी आए, सबको नया दिलाना।
बच्चें मौज उड़ाएं, पड़े काम पर जाना।।
थके हुए घर आना, सबका साथ निभाना।
पीर समंदर जैसा, अंदर हीं दफनाना।।
थामें रखना बाहें, कंधे पर बैठाना।
अपने लिए न मांगे, सबकी भजन लगाना।।
कभी प्यार की बातें, कभी सख्त हो जाना।
खुद को सदा भुलाना, सबमें खुद को पाना।।
अंदर – अंदर रोना, बाहर हँसी दिखाना।
पिता सहज है होना, कठिन पिता बन पाना।।

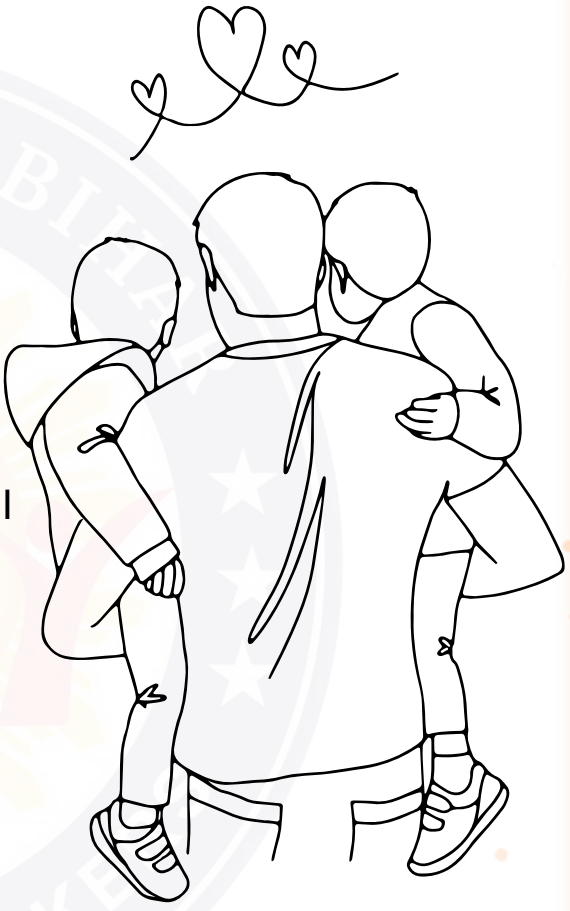

राम किशोर पाठक
सियारामपुर पालीगंज पटना बिहार

पुस्तकें: ज्ञान का वरदान

पुस्तकें प्रेरणा वान,
ज्ञान का है वरदान,
सच्चा मीत मानकर,
आत्मसात कीजिए।
प्रतिदिन खोलकर,
पाठ करें बोलकर,
शारदे का अद्भुत ये,
वरदान लीजिए।
नये नये शब्द पढ़,
सुंदर विचार गढ़,
शब्द-शब्द आनंद के,
अमृत को पीजिए।
नैतिक वचन भर,
मौलिक सृजन कर,
अविकारी मन भर,
अनुदान दीजिए।

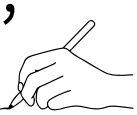

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010